(७)

युक्रांद

युवक क्रांति दल का मुखपत्र

संदेह नहीं तो खोज कैसे होगी ?

संदेह नहीं तो असंतोष कैसे होगा ?

संदेह नहीं तो प्राण सत्य को जानने और पाने को आकुल कैसे होंगे ?

ध्यान रहे श्रद्धा और विश्वास बाँधते हैं, संदेह मुक्त करता है।

युक्रांद

आचार्य श्री रजनीश जी की
सृजनात्मक जीवन दृष्टि का
पाक्षिक संकलन-पत्र

मानसेवी सम्पादक
अजित कुमार

सह-सम्पादक
आलोक पांडे

वर्ष १ : अंक ७
१ अक्टूबर १९६९

मूल्य
६० न० पै० एक प्रति
वार्षिक १२ रु०

मुखपृष्ठ लेआउट
शशिन् यादव

दो शब्द–

"व्यक्ति का जीवन उसकी चेतना की स्वतंत्र अभिव्यक्ति है। इस स्वतंत्र अभिव्यक्ति की ओर आचार्य श्री इंगित करते हैं – लेकिन हम हैं कि इन इंगितों को पकड़ लेते हैं—और वह दिशा खो जाती है जहाँ की ओर के लिए वे इंगित हैं।"

"युक्रांद" आचार्य श्री के इंगितों को आप तक पहुंचा रहा है– वहाँ हो जाने के लिए ....

युक्रांद परिवार....

निवेदन—

पोस्टल रजिस्ट्रेशन की तारीख में अनुकूलता लाने के लिए हमने अपना १६ सितम्बर का अंक न निकालकर १ अक्टूबर का निकाला है। अंक का क्रम नहीं बदला है। आगे आपको प्रतिमाह दो अंक नियमित मिला करेंगे।

बोध कथायें

●

प्रभु निकट है :

सत्य की एक किरण भी बहुत है। ग्रंथों का भार जो नहीं करता है, सत्य की एक झलक भी वह कर दिखाती है। अँधेरे में उजाला करने को प्रकाश के ऊपर बड़े-बड़े शास्त्र किसी काम के नहीं, एक मिट्टी का दिया जला आना ही पर्याप्त है।

राल्फ वाल्डे इमरसन के व्याख्यानों में एक बूढ़ी धोबिन निरन्तर देखी जाती थी। लोगों को हैरानी हुई, एक अपढ़ गरीब औरत इमरसन की गम्भीर वार्ताओं को क्या समझती होगी? किसी ने आखिर उससे पूछ ही लिया कि तेरी समझ में क्या आता है? उस बूढ़ी धोबिन ने उत्तर दिया—"मैं जो नहीं समझती, उसे तो क्या बताऊँ लेकिन एक बात मैं खूब समझ गई हूं और पता नहीं कि दूसरे उसे समझे हैं या नहीं, मैं तो अपढ़ हूं और मेरे लिए वह एक बात ही काफी है। उस बात ने तो मेरा सारा जीवन ही बदल दिया है और वह बात क्या है? वह है कि मैं भी प्रभु से दूर नहीं हूं, एक दरिद्र अज्ञानी स्त्री से भी प्रभु दूर नहीं है। प्रभु निकट है—निकट ही नहीं, स्वयं में है। यह छोटा-सा सत्य मेरी दृष्टि में आ गया है और अब मैं नहीं समझती कि इससे भी बड़ा कोई और सत्य हो सकता है।"

●

प्रेम अभय है :

एक युवक अपनी नव-वधू के साथ समुद्र-यात्रा पर था। सूर्यास्त हुआ, रात्रि का घनांधकार छा गया और फिर एकाएक जोरों का तूफान उठा। यात्री भय से व्याकुल हो उठे। प्राण संकट में थे। जहाज अब डूबा तब डूबा होने लगा, किन्तु वह युवक जरा भी नहीं घबराया। उसकी पत्नी ने आकुलता से पूछा : "तुम निश्चित क्यों बैठे हो? देखते नहीं जीवन के बचने की सम्भावना क्षीण होती जा रही है?" उस युवक ने अपनी म्यान से तलवार निकाली और पत्नी की गर्दन पर रखकर कहा : "क्या तुम्हे डर लगता है? क्या मेरी तलवार से तुम्हारे प्राण संकट में नहीं हैं?" वह युवती हँसने लगी और बोली : "तुमने यह कैसा ढोंग रचा? तुम्हारे हाथ में तलवार हो तो मुझे भय कैसा?" वह युवक बोला : "परमात्मा के होने की गंध जबसे मुझे मिली तब से ऐसा ही भाव मेरा उनके प्रति भी है। प्रेम है तो भय कहाँ?"

दो भाव-सुमन

शिव

आचार्य श्री रजनीश
के
चरणों में

★

हे मेरे परमदेव !
चाहता हूं कि
मेरे सामने कोरा कागज हो
और हाथ में कलम
और मन में तुम्हें लिखने की उत्कटता —
कि तुम क्यों नहीं उत्तर देते मुझे ?
द्वार खटखटाने पर
क्यों नहीं खुलते ?
—और ठीक उसी क्षण
मृत्यु अपने आंचल में मुझे
ढँक ले
ताकि कोई जान भी न पाये कि
मैं किसे व क्या लिखने वाला था
बस तू जाने और मैं ।

आचार्य श्री रजनीश
के प्रति

★

हे प्रभो !
अब मैं जान गया हूं कि तू
मेरे अत्यंत निकट है
और मेरी हर गतिविधि तेरे
नियंत्रण में हो गई है
मैं आज आनन्द की अधिकता में रो पड़ा हूं
जब ज्ञात हुआ कि
श्वांस-प्रश्वांस पर भी मेरा वश नहीं है
सच, मैं इतना स्वतंत्र हो गया हूं
कि स्वतंत्र ही नहीं रह गया....।

युवक और यौन

(बड़ौदा जीवन जागृति केन्द्र के सौजन्य से)

एक कहानी से मैं अपनी बात शुरू करना चाहूंगा ।

एक बहुत अद्‌भुत व्यक्ति हुआ है । उस व्यक्ति का नाम था नसरुद्दीन । एक दिन सांझ वह अपने घर से बाहर निकलता था मित्रों से मिलने के लिए । तभी द्वार पर एक बचपन का बिछड़ा हुआ साथी घोड़े पर से उतरा । बीस वर्ष बाद वह मित्र उससे मिलने आया था । लेकिन नसरुद्दीन ने कहा कि तुम ठहरो घड़ी भर, मैं किसी को वचन दिया हूं, उनसे मिलकर अभी लौटकर आता हूं । दुर्भाग्य कि वर्षों बाद तुम मिले हो और मुझे घर से अभी जाना पड़ रहा है, लेकिन मैं जल्दी ही लौट आऊंगा ।

उस मित्र ने कहा : तुम्हें छोड़ने का मेरा मन नहीं, वर्षों बाद हम मिले हैं । उचित होगा कि मैं भी तुम्हारे साथ चलूं । रास्ते में तुम्हें देखूँगा भी तुमसे बात भी कर लूंगा । लेकिन मेरे सब कपड़े धूल से भरे हैं । अच्छा होगा यदि तुम्हारे पास दूसरे कपड़े हों तो मुझे दे दो ।

फकीर कपड़े की एक जोड़ी, जिसे बादशाह ने उसे भेंट की थी — सुन्दर कोट था, पगड़ी थी जूते थे—वह अपने मित्र के लिए निकाल लाया उसने उसे कभी पहना नहीं था । सोचा था; कभी जरूरत पड़ेगी, तो पहनूंगा । फिर वह फकीर था वे कपड़े बादशाही थे, हिम्मत भी उसकी पहनने की नहीं पड़ी थी । मित्र ने जल्दी से वे कपड़े पहन लिए । जब मित्र कपड़े पहन रहा था तभी नसरुद्दीन को लगा कि यह तो भूल हो गयी । इतने सुन्दर कपड़े पहनकर वह मित्र तो एक सम्राट मालूम पड़ने लगा और नसरुद्दीन उसके सामने एक फकीर, एक भिखारी मालूम पड़ने लगा। सोचा रास्ते पर लोग मित्र की तरफ ही देखेंगे जिसके कपड़े अच्छे हैं । लोग तो सिर्फ कपड़ों की तरफ देखते हैं और तो कुछ दिखायी नहीं पड़ता है । जिनके घर ले जाऊंगा वह भी मित्र को ही देखेंगे क्योंकि हमारी आँखें इतनी अधी हैं कि सिवाय कपड़ों के और कुछ भी नहीं देखतीं । उसके मन में बहुत पीड़ा होने लगी कि यह कपड़े पहनाकर मैंने एक भूल कर ली । लेकिन फिर उसे ख्याल आया कि मेरा प्यारा मित्र है, वर्षों के बाद मिला है, क्या अपने कपड़े भी मैं उसको नहीं दे सकता ? इतनी नीच, इतनी क्षुद्र मेरी वृत्ति है ? क्या रखा है कपड़ों में ?

"संयमी आदमी के भीतर हमेशा कुछ दबा होता है । जो ऊपर से दिखाई देता है, उससे ठीक उल्टा उसके भीतर दबा होता है ।"

यही सब अपने को समझाता हुआ वह चला, रास्ते पर सारी नजरें उसके मित्र के कपड़ों पर अटक गईं । जिसने भी देखा वही गौर से देखने लगा । वह मित्र बड़ा सुन्दर मालूम पड़ रहा था । जब भी कोई उसके मित्र को देखता, नसरुद्दीन के मन में चोट लगती कि कपड़े मेरे हैं और देखा मित्र जा रहा है । फिर अपने को समझाता कि कपड़े क्या किसी के होते हैं ? मैं तो शरीर तक को अपना नहीं मानता तो कपड़े को अपना क्या मानना है ? इसमें क्या हर्ज हो गया है ? समझाता बुझाता अपने मित्र के घर पहुंचा । भीतर जाकर जैसे ही अन्दर गया परिवार के लोगों की नजरें उसके मित्र के कपड़ों पर अटक गईं । फिर उसे चोट लगी, ईर्ष्या मालूम हुई मेरे ही कपड़े हैं और मैं ही इसके सामने दीन लग रहा हूं । बड़ी भूल हो गई । फिर अपने को समझाया, फिर अपने मन को दबाया ।

घर के लोग पूछने लगे कौन हैं यह ? नसरुद्दीन ने परिचय दिया । कहा : मेरे मित्र हैं बचपन के, बहुत अद्‌भुत व्यक्ति हैं । जमाल इनका नाम है । रह गये कपड़े, सो मेरे हैं ।

घर के लोग बहुत हैरान हुए । मित्र भी हैरान हुआ । नसरुद्दीन भी कहकर हैरान हुआ । सोचा भी नहीं था कि यह शब्द मुंह से निकल जायेंगे । लेकिन जो दबाया जाता है वह निकल जाता है । जो दबाओ वह निकलता है, जो सप्रेस करो वह प्रगट होगा । इसलिए भूल कर भी गलत चीज न दबाना अन्यथा सारा जीवन गलत चीज की अभिव्यक्ति बन जाता है । वह बहुत घबरा गया । सोचा भी नहीं था कि ऐसा मुंह से निकल जाएगा। मित्र भी बहुत हतप्रभ रह गया । घर के लोग भी सोचने लगे, यह क्या बात कही ! बाहर निकलकर मित्र ने कहा : क्षमा करो अब मैं तुम्हारे साथ दूसरे घर में नहीं जाऊंगा । यह तुमने क्या बात कही ?

नसरुद्दीन की आंखों में आंसू आ गये । क्षमा मांगने लगा । कहने लगा भूल हो गई, जबान पलट गई । लेकिन जबान कभी भी नहीं पलटती है । ध्यान रखना, जो भीतर दबा हो वह कभी भी जबान से निकल जाता है । जबान पलटती कभी भी नहीं । तो वह कहने लगा क्षमा कर दो अब ऐसी भूल न होगी । कपड़े में क्या रखा है ! लेकिन कैसे निकल गई यह बात, मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि कपड़े किसके हैं ! लेकिन आदमी वही नहीं कहता जो सोचता रहता है । कहता कुछ और है सोचता कुछ और है । । कहता था मैंने तो कुछ सोचा भी नहीं, कपड़े का तो मुझे ख्याल भी नहीं आया । यह बात कैसे निकल गई ! जबकि घर से चलने में और घर तक आने में सिवाय कपड़े के उसको कुछ भी ख्याल नहीं आया था ।

आदमी बहुत बेईमान है । जो उसके भीतर ख्याल आता है, कभी कहता भी नहीं है । और जो बाहर बताता है वह भीतर बिल्कुल नहीं होता है । आदमी सरासर झूठ है । मित्र ने कहा, 'मैं चलता हूं तुम्हारे साथ लेकिन अब कपड़े की बात न उठाना ।' नसरुद्दीन ने कहा— कपड़े तुम्हारे ही हो गये । अब मैं वापस पहनूंगा भी नहीं। कपड़े में रखा क्या है ? कह तो वह रहा था कि कपड़े में क्या रखा है, लेकिन दिखाई पड़ रहा था कि कपड़े में ही सब कुछ रखा है वे कपड़े बहुत सुन्दर थे । वह मित्र बहुत अद्‌भुत मालूम पड़ रहा था । फिर चले रास्ते पर और नसरुद्दीन फिर अपने को समझाने लगा कि कपड़े दे ही दूंगा मित्र को । लेकिन जितना समझाता था उतना ही मन कहता था कि एक बार भी तो पहिने नहीं ।

दूसरे घर तक पहुंचे, संभलकर, संयम से । और संयमी आदमी हमेशा खतरनाक होता है क्योंकि संयमी का मतलब होता है कि उसने कुछ भीतर दबा रखा है । सच्चा आदमी सिर्फ सच्चा आदमी होता है । उसके भीतर कुछ भी दबा नहीं रहता है । संयमी आदमी के भीतर हमेशा कुछ दबा होता है । जो ऊपर से दिखाई देता है ठीक उल्टा उसके भीतर दबा होता है । उसी को दबाने की कोशिश में वह संयमी हो जाता है । संयमी के भीतर हमेशा बारूद है जिसमें कभी भी आग लग जाय तो बहुत खतरनाक है । और चौबीस घण्टे दबाना पड़ता है उसे जो दबाया गया है । उसे एक क्षण को भी फुर्सत दी, छुट्टी दी कि वह बाहर आ जाएगा । इसीलिए संयमी आदमी को अवकाश कभी नहीं होता है—चौबीस घण्टे, जबतक जागता है । हाँ नींद में बहुत गड़बड़ हो जाती है, सपने में सब बदल जाता है, और जिसको दबाया है वह नींद में प्रगट होने लगता है क्योंकि नींद में सयम नहीं चलता । इसीलिए संयमी आदमी नींद से डरता है । आपको पता है संयमी आदमी कहता है क्या सोना ? इसके अलावा उसका कोई कारण नहीं है । नींद तो परमात्मा का अद्‌भुत आशीर्वाद है । लेकिन संयमी नींद से डरता है । क्योंकि जो दबाया है वह नींद में धक्के मारता है, सपने बनकर आता है ।

किसी तरह संयम साधना करके वह बेचारा नसरुद्दीन उस दूसरे मित्र के घर में घुसा । दबाये हुए है मन को सोच रहा है कि कपड़े मेरे नहीं हैं मित्र के ही हैं !

लेकिन जितना वह कह रहा है कि मेरे नहीं हैं मित्र के हैं, उतने ही कपड़े उसे अपने मालूम पड़ रहे हैं। इन्कार बुलावा है। मन में भीतर 'ना' का मतलब 'हाँ' होता है। जिस बात को तुमने कहा 'नहीं' मन कहेगा 'हाँ' यही'। मन कहने लगा कौन कहता है कपड़े मेरे नहीं हैं? और नसरुद्दीन की ऊपर की बुद्धि समझाने लगी कि नहीं, कपड़े तो मैंने दे दिए मित्र को। जब वे भीतर घर में गये तब नसरुद्दीन को देखकर कोई समझ भी नहीं सकता था कि वह भीतर कपड़े से लड़ रहा है। घर में मित्र मौजूद नहीं था, उनकी सुन्दर पत्नी मिली उसकी आँखें एकदम अटक गईं मित्र के ऊपर। नसरुद्दीन को फिर धक्का लगा। उस सुन्दर स्त्री ने उसे भी कभी इतने प्रेम से नहीं देखा था। पूछने लगी यह कौन हैं? कभी देखा नहीं इन्हें? नसरुद्दीन ने सोचा:— इस दुष्ट को कहां साथ ले आया। जो देखो इसको देखता है। और पुरुषों के देखने तक गनीमत थी। लेकिन सुन्दर स्त्रियां भी उसी को देख रही हों तो फिर बहुत मुसीबत हो गई। प्रगट में कहा; मेरे मित्र हैं, बचपन के साथी हैं। बहुत अच्छे आदमी हैं। रह गये कपड़े, सो उन्हीं के हैं—मेरे नहीं हैं।

लेकिन कपड़े अगर उन्हीं के थे तो कहने की जरूरत क्या थी? कह गया तब पता चला कि भूल हो गई। भूल नियम है। भूल हमेशा अतियों पर होती है, एक्सट्रीम पर होती है। एक एक्सट्रीम से बचो तो दूसरे एक्सट्रीम पर हो जाती है। भूल घड़ी के पेंडुलम की तरह चलती है। एक कोने से दूसरे कोने पर जाती है बीच में नहीं रुकती। भोग से जायेगी तो एकदम त्याग पर चली जाएगी। एक बेवकूफी से छूटी, दूसरी बेवकूफी पर पहुंच जाएगी। जो ज्यादा भोजन से बचेगा वह उपवास करेगा। और उपवास ज्यादा भोजन से भी बदतर है। क्योंकि ज्यादा भोजन भी आदमी दिन में दो एक बार कर सकता है लेकिन उपवास करने वाला आदमी दिनभर मन ही मन भोजन करता है। वह चौबीस घण्टे भोजन करता है। एक भूल से आदमी का मन बचता है तो दूसरी भूल पर चला जाता है। अतियों पर वह डोलता है, एक भूल की थी कि कपड़े मेरे हैं, अब दूसरी भूल हो गई कि कपड़े उसी के हैं तो साफ हो जाता है कि कपड़े उसके बिल्कुल नहीं हैं। यह बड़े मजे की बात है कि जोर से हमें वही बात कहनी पड़ती है जो सच्ची नहीं होती है। अगर तुम कहो कि मैं बहुत बहादुर आदमी हूं तो समझ लेना कि तुम पक्के नम्बर एक के कायर हो। अभी हिन्दुस्तान पर चीन का हमला हुआ। सारे देश में कवि पैदा हो गये जैसे बरसात में मेंढक पैदा हो जाते हैं। हम सोये हुए शेर हैं, हमें मत छेड़ो! कभी सोये हुए शेर ने कविता की है कि हमको मत छेड़ो? कभी सोये शेर को छेड़ कर देखो तो पता चल जाएगा कि छेड़ने का क्या मतलब होता है। लेकिन हमारा पूरा मुल्क कहने लगा कि हम सोये शेर हैं। हम ऐसा कर देंगे, वैसा कर देंगे। चीन लाखों मील जमीन दबाकर बैठ गया और हमारे सोये शेर फिर से सो गये कविता बन्द करके। यह शेर होने का ख्याल शेरों को पैदा नहीं होता। यह कायरों को पैदा होता है। शेर, शेर होता है। चिल्ला-चिल्लाकर कहने की उसे जरूरत नहीं होती। जो जितने जोर से हम कहते हैं ठीक उससे उल्टा हमारे भीतर होता है। इसीलिए जोर से कुछ कहते समय जरा संभलकर कुछ कहना। अगर किसी से कहो कि मैं तुम्हें बहुत प्रेम करता हूं तो संदिग्ध है वह प्रेम। प्रेम कहीं बहुत किया जाता है? बस, किया जाता है या नहीं किया जाता है। लेकिन आदमी का मन पूरे वक्त नासमझियों के चक्कर में घूमता है।

कह तो दिया नसरुद्दीन ने कि कपड़े—कपड़े इन्हीं के हैं। लेकिन सुनकर वह स्त्री हैरान हुई। मित्र भी हैरान हुआ कि फिर वही बात! बाहर निकलकर उस मित्र ने कहा कि क्षमा करो अब मैं लौट जाता हूं। गलती हो गई कि तुम्हारे साथ आया। क्या तुम्हें कपड़े ही कपड़े दिखाई पड़ रहे हैं? नसरुद्दीन ने कहा: मैं खुद भी नहीं समझ पाता। आज तक जिन्दगी में कपड़े मुझे दिखाई नहीं पड़े। यह पहला ही मौका है! क्या हो गया है मुझे? मेरे दिमाग में क्या गड़बड़ी हो गई? पहले एक भूल हो गई थी अब उससे उल्टी भूल हो गई। अब मैं कपड़े की बात ही नहीं करूँगा। बस, एक मित्र के घर और मिलने चलना है। फिर हम वापस लौट चलेंगे। और

एक मौका मुझे दो। नहीं तो जिन्दगी भर के लिए अप-राध मन में रहेगा कि मैंने मित्र के साथ कैसा दुर्व्य-वहार किया।

मित्र साथ जाने को राजी हो गया। सोचा था अब और क्या करेगा भूल। बात खत्म हो गई है। दो ही बातें हो सकती थी और दोनों बातें हो गई हैं। लेकिन उसे पता न था कि भूल करने वाले बड़े इनवेंटिव होते हैं, नयी भूलें ईजाद कर लेते हैं। शायद आपको भी पता न हो।

वे तीसरे मित्र के घर गये। अब की बार तो नस-रुद्दीन अपनी छाती को दबाये बैठा है कि कुछ भी हो जाय लेकिन कपड़ों की बात न निकालूंगा। जितने जोर से किसी चीज को दबाओ उतने जोर से वह पैदा होनी शुरू होती है। किसी चीज को दबाना उसे शक्ति देने का दूसरा नाम है। दबाओ और शक्ति मिलती है उसे। जितने जोर से आप दबाते हैं उस जोर में जो ताकत आपको लगती है वह उसी में चली जाती है जिसको आप दबाते हैं। ताकत मिल गयी उसे। अब वह दबा रहा है और पूरे वक्त पा रहा है कि मैं कमजोर पड़ता जा रहा हूं, कपड़े मजबूत होते जा रहे हैं। कपड़े जैसी फिजूल चीज भी इतनी मजबूत हो सकती है कि नसरुद्दीन जैसा ताकतवर आदमी हारा जा रहा है उसके सामने। जो किसी चीज से न हारा था, आज साधारण से कपड़े हराये डालते है। वह अपनी पूरी ताकत लगा रहा है लेकिन उसे पता नहीं है कि पूरी ताकत हम उसके खिलाफ लगाते हैं, जिससे हम भयभीत हो जाते हैं जिससे हार जाते हैं, उससे हम कभी नहीं जीत सकते। ताकत से नहीं जीतना है, अभय से जीतना है, फियरले-सनेस से जीतना है। बड़े से बड़ा ताकतवर हार जायेगा अगर भीतर भय हो तो। ध्यान रहे - हम दूसरे से कभी नहीं हारते, अपने ही भय से हारते हैं। कमसे कम मान-सिक जगत में तो यह पक्का है कि दूसरा हमें कभी नहीं हराता है, हमारा भय ही हमें हरा देता है। नसरुद्दीन जितना भयभीत हो रहा है उतनी ही ताकत लगा रहा है। और वह जितनी ताकत लगा रहा है उतना भयभीत हुआ जा रहा है क्योंकि कपड़े छूटते नहीं हैं। वे मन में बहुत चक्कर काट रहे हैं।

तीसरे मकान के भीतर घुसा है। लगता है वह होश में नहीं है, बेहोश है। उसे न दीवालें दिख रही हैं, न घर के लोग दिखायी पड़ रहे हैं। उसे केवल वही कोट पगड़ी दिखायी पड़ रहे हैं, मित्र भी खो गया है। बस कपड़े हैं और वह है। हालांकि ऊपर से किसी को पता नहीं चलता है। जिस घर में गया, फिर आंखें टिक गयीं वहीं उसके मित्र के कपड़े पर। पूछा गया कौन हैं यह? लेकिन नसरुद्दीन जैसे बुखार में है, वह होश में नहीं है। दमन करने वाले लोग हमेशा, बुखार में जीते है, कभी स्वस्थ नहीं होते। सप्रेशन जो है वह मेंटल फीवर है। दमन जो है वह मानसिक बुखार है। दबा लिया है और बुखार पकड़ा हुआ है। हाथ पैर कांप रहे हैं उसके। वह अपने हाथ पैर रोकने की बेकार कोशिश कर रहा है। जितना रोकता है वे उतने कांपे जा रहे हैं। कौन हैं यह? .....यह तो अब उसे खुद भी याद नहीं आ रहा है। कौन हैं यह? —शायद कपड़े हैं, सिर्फ कपड़े! साफ मालूम पड़ रहा है कि कपड़े हैं लेकिन यह कहना नहीं है। लगा जैसे बहुत मुश्किल में पड़ रहा है उसे याद करने के लिए फिर बहुत मुश्किल से कहा: मेरे बचपन के मित्र हैं नाम है फलां फलां और रह गये कपड़े, सो कपड़े की तो बात ही नहीं करनी है। वे किसी के भी हों उनकी बात नहीं उठानी है।

लेकिन बात उठ गयी। जिसकी बात न उठानी हो उसी की बात ज्यादा उठती है!

यह छोटी सी कहानी क्यों मैंने कही? सेक्स की बात नहीं उठानी है और उसकी ही बात चौबीस घंटे उठती है। नहीं किसी से बात करनी है, तो फिर अपने से ही बात चलती है। न करें दूसरे से, तो खुद ही करनी पड़ेगी बात अपने आप से। और दूसरे से बात करने में राहत भी मिल सकती है, खुद से बात करने में कोई राहत भी नहीं हैं। कोल्हू के बैल की तरह अपने भीतर ही घूमते रहो। सेक्स की बात नहीं करनी है, उसकी बात ही नहीं उठानी है। मां अपने बेटे के सामने नहीं उठाती। बेटा अपने बाप के सामने नहीं उठाता। मित्र, मित्र के सामने नहीं उठाते। क्योंकि उठानी ही नहीं है बात। जो

उठाते हैं वे अशिष्ट हैं जबकि चौबीस घंटे सबके मन में वही बात चलती है। सेक्स उतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि बात न उठाने से महत्वपूर्ण हो गया है। सेक्स उतना महत्वपूर्ण बिल्कुल नहीं है जितना कि हम समझ रहे हैं इसे। लेकिन किसी भी व्यर्थ की बात को उठाना बन्द कर दें तो वह सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हो जायेगा। इस दरवाजे पर एक तख्ती लगा दें, यहां झांकना मना है और यहां झांकना बड़ा महत्वपूर्ण हो जायेगा। फिर चाहे आपकी युनिवर्सिटी में कुछ भी हो रहा हो, भले आइंस्टीन ही अगर गणित पर भाषण दे रहे हो— बेकार है वह सब। यह तख्ती ही महत्वपूर्ण है, यहीं झांकने की जरूरत हो जायेगी। हर विद्यार्थी यहीं चक्कर लगाने लगेगा। लड़के जरा जोर से लगायेंगे, लड़कियां जरा धीरे से। कोई बुनियादी फर्क नहीं है आदमी आदमी में। मन में भी होगा कि क्या है इस तख्ती के भीतर ? यह तख्ती एकदम अर्थ ले लेगी। हां, कुछ जो अच्छे लड़के लड़कियां नहीं हैं ? वे आकर सीधा झांकने लगेंगे। वे ही बदनामी उठायेंगे कि ये अच्छे लोग नहीं हैं क्योंकि तख्ती जहां लगी थी कि नहीं झांकना है, वहां एक वे ही नहीं झांकेंगे जो भद्र हैं, सज्जन हैं, अच्छे घर के हैं या इस तरह के वहम जिनके दिमाग में हैं। वे उधर से तिरछी आंखें किये हुए निकल जाएंगे। आंखें तिरछी रहेंगी, दिखाई तख्ती ही पड़ेगी उन महाशय को भी और तिरछी आंखों से जो चीज दिखाई पड़ती है वह बहुत खतरनाक होती है। दिखाई भी नहीं पड़ती और दिखाई भी पड़ती है। देख भी नहीं पाते, मन में भाव भी रह जाता है देखने का। फिर पीड़ित जन जो यहां से तिरछी आंखें किये हुए निकल जाएंगे, वह इसका बदला लेंगे। किससे ? जो झांक रहे थे उनसे। गालियां देंगे उनको कि बुरे लोग हैं, अशिष्ट हैं, सज्जन नहीं हैं, असाधु हैं,। और इस तरह मन में सांत्वना, कंसोलेशन जुटायेंगे कि हम अच्छे आदमी हैं, इसलिए हमने झांककर नहीं देखा। लेकिन झांककर देखना तो जरूर था, यह मन कहे चला जाएगा। फिर सांझ होते-होते, अंधेरा घिरते-घिरते वह आयेंगे। क्लास में बैठकर पढ़ेंगे तब भी तख्ती दिखाई पड़ेगी, किताब नहीं। लेबोरेट्री में एक्सपेरीमेंट करते होंगे और तख्ती बीच-बीच में आ जाएगी। सांझ तक वह आ जाएंगे देखने। आना पड़ेगा।

आदमी के मन के नियम हैं। इन नियमों का उल्टा नहीं हो सकता है। हां, कुछ जो बहुत ही कमजोर होंगे वह शायद नहीं आ पायेंगे तो रात सपने में उनको भी वहाँ आना पड़ेगा। मन के नियम अपवाद नहीं मानते हैं। जगत के किसी नियम में कोई अपवाद नहीं होता। जगत के नियम अत्यन्त वैज्ञानिक हैं। मन के नियम भी उतने ही वैज्ञानिक हैं। यह जो सेक्स इतना महत्वपूर्ण हो गया है वर्जना के कारण। वर्जना की तख्ती लगी है। उस वर्जना के कारण यह इतना महत्वपूर्ण हो गया कि सारे मन को घेरे रहता है। सारा मन सेक्स के इर्द-गिर्द घूमने लगा है। फ्रायड ठीक कहता है कि मनुष्य का मन सेक्स के आसपास ही घूमता है। लेकिन वह यह गलत कहता है कि सेक्स महत्वपूर्ण है इसलिये घूमता है। नहीं, घूमने का कारण है बर्जना, इंकार, विरोध, निषेध। घूमने का कारण है हजारों साल की परम्परा। सेक्स को वर्जित, गर्हित, निंदित सिद्ध करने वाली परम्परा इसके लिये जिम्मेवार है। सेक्स को इतना महत्वपूर्ण बनाने वालों में साधू, सन्त, महात्माओं का हाथ है। उन्होंने तख्ती लटकाई वर्जना की। वह बड़ा उल्टा मालूम पड़ेगा, लेकिन यही सत्य है और कहना जरूरी है। मनुष्य जाति को सेक्सुअलिटी की, कामुकता की तरफ ले जाने का काम महात्माओं ने ही किया है। जितने जोर से वर्जना लगाई है उन्होंने, आदमी उतने जोर से आतुर होकर भागने लगा है। इधर वर्जना लगा दी, उधर उसका परिणाम यह हुआ है कि सेक्स आदमी की रग-रग से फूटकर निकल पड़ा है। थोड़ी खोजबीन करो, ऊपर की राख हटाओ, भीतर सेक्स मिलेगा ! उपन्यास, कहानी, महान से महान साहित्यकार की जरा राख झाड़ो, भीतर सेक्स मिलेगा ! चित्र देखो मूर्ति देखो सिनेमा देखो सब वही ! और साधु सन्त इस वक्त सिनेमा के बहुत खिलाफ हैं शायद उन्हें पता नहीं कि सिनेमा नहीं था तो भी आदमी यही सब करता था। कालिदास के ग्रन्थ पढ़ो कोई फिल्म इतनी अश्लील नहीं बन सकती जितने कालिदास के वचन हैं।

उठाकर देखें पुराने साहित्य को, पुरानी मूर्तियों को पुराने मंदिरों को। जो फिल्म में है वह पत्थरों में खुदा मिलेगा। लेकिन उससे आंख नहीं खुलती हमारी। हम अन्धे की तरह पीछे चले जाते हैं—लकीरों पर।

सेक्स जब तक दमन किया जाएगा और जब तक स्वस्थ खुले आकाश में उसकी बात न होगी, और जब तक एक एक बच्चे के मन से वर्जना की तख्ती नहीं हटेगी, तब तक दुनियां सेक्स के आप्रेशन से मुक्त नहीं हो सकती। तब तक सेक्स एक रोग की तरह आदमी को पकड़े रहेगा। वह कपड़े पहनेगा तो नजर सेक्स पर होगी। खाना खायेगा तो नजर सेक्स पर होगी। किताब पढ़ेगा तो नजर सेक्स पर होगी, गीत गायेगा तो नजर सेक्स पर होगी। संगीत सुनेगा तो नजर सेक्स पर होगी। नाच देखेगा तो नजर सेक्स पर होगी। सारी जिन्दगी उसकी सेक्स के आसपास घूमेगी।

अनातोले फ्रॉस मर रहा था। मरते वक्त एक मित्र उसके पास गया और अनातोले जैसे अद्‌भुत साहित्यकार से उसने पूछा कि मरते वक्त तुमसे यह पूछता हूं अनातोले कि जिन्दगी में सबसे महत्वपूर्ण क्या है? अनातोले ने कहा, जरा पास आ जाओ, कान में ही बता सकता हूं। आसपास और लोग भी बैठे हैं। मित्र पास आ गया। वह हैरान हुआ कि अनातोले जैसा आदमी जो मकानों की चोटियों पर चढ़कर चिल्लाने का आदी है. जो उसे ठीक लगा हमेशा कहता रहा है। वह भी आज मरते वक्त इतना कमजोर हो गया है कि जीवन की सबसे महत्वपूर्ण बात बताने को कहता है कि पास आ जाओ, कान में कहूंगा। सुनो धीरे से कान में! मित्र पास सरक आया। अनातोले कान के पास होंठ ले गया लेकिन कुछ बोला नहीं। मित्र ने कहा बोलते नहीं? अनातोले ने कहा, तुम समझ गये होगे, अब बोलने की क्या जरूरत है।

ऐसा मजा है और मित्र समझ गये और तुम भी समझ गये होगे, लेकिन हंसते नहीं। समझ गये न? बोलने की कोई जरूरत नहीं है। यह क्या पागलपग है? यह कैसे मनुष्य को पागलपन की ओर ले जाने का दुनिया को पागलखाना बनाने की कोशिश चल रही है। इसका बुनियादी कारण यह है कि सेक्स को आज तक स्वीकार नहीं किया गया। जिससे जीवन का जन्म होता है, जिससे जीवन के बीज फूटते हैं। जिससे जीवन के फूल आते हैं, जिससे जीवन को सारी सुगन्ध है, सारा रंग है। जिससे जीवन का सारा नृत्य है जिसके आधार पर जीवन का पहिया घूमता है। उसको स्वीकार नहीं किया गया है। जीवन के मौलिक आधार को अस्वीकार किया गया है। जीवन में जो केन्द्रीय था, परमात्मा जिसको सृष्टि का आधार बनाये हुए है, चाहे फूल हो चाहे पक्षी हो चाहे बीज हो, चाहे पौधे हों चाहे मनुष्य हों, सेक्स जो कि जीवन के जन्म का मार्ग है, उसको ही अस्वीकार कर दिया है? उस अस्वीकृति के दो परिणाम हुए। अस्वीकार करते ही वह सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया। अस्वीकार करते ही वह सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो गया और मनुष्य के चित्त को उसने सब तरफ से पकड़ लिया। अस्वीकार करते ही उसे सीधा जानने का कोई उपाय नहीं रहा। इसलिए तिरछे जानने के उपाय खोजने पड़े जिनसे मनुष्य का चित्त विकृत और बीमार होने लगा। जिस चीज को सीधा जानने के उपाय न रह जायें और मन जानना चाहता हो, तो फिर गलत उपाय खोजने पड़ते हैं। मनुष्य को अनैतिक बनाने में तथाकथित नैतिक लोगों की वर्जनाओं का हाथ है। जिन लोगों ने आदमी को नैतिक बनाने की चेष्टा की है दमन के द्वारा, वर्जना के द्वारा, उन लोगों ने सारी मनुष्य जाति को अनैतिक बना दिया है। और जितना आदमी अनैतिक होता चला जाता है उतनी ही उसकी वर्जना सख्त होती चली जाती है। वे कहते हैं कि फिल्मों में नंगी तस्वीरें नहीं होनी चाहिए। वे कहते हैं पोस्टरों पर नंगी तस्वीरें नहीं होनी चाहिये। वे कहते हैं किताब ऐसी होनी चाहिए। वे कहते हैं फिल्म में चुम्बन लेते वक्त कितने इंच का फासला हो यह भी गवर्नमेंट तय करे! वे यह सब कहते है, बड़े अच्छे लोग हैं वे इसलिए वे कहते हैं कि आदमी अनैतिक न हो जाये और उनकी ये सब चेष्टायें फिल्मों को और गंदा करती चली जाती हैं। पोस्टर और अश्लील होते चले जाते हैं, किताबें और गंदी होती चली

जाती हैं। हाँ, एक फर्क पड़ता है। किताब के भीतर कुछ रहता है, ऊपर कवर कुछ और रहता है। और अगर ऐसा नहीं रहता है तो लड़का गीता खोल लेता है और गीता के अन्दर दूसरी किताब रख लेता है, उसको पढ़ता है। बाइबिल का कवर चढ़ा लेता है ऊपर फिर पढ़ता है। कोई लड़का बाइबिल पढ़ता है? अगर बाइबिल पढ़ता हो तो समझना भीतर कोई दूसरी किताब है।

यह सब धोखा, यह डिसेप्सन पैदा होता है वर्जना से। विनोबा कहते हैं, तुलसी कहते हैं, अश्लील पोस्टर नहीं चाहिए। पुरुषोत्तमदास टंडन तो यहाँ तक कहते थे कि खुजराहो और कोणार्क के मंदिरों पर मिट्टी पोतकर उनकी प्रतिमाओं को ढंक देना चाहिये कहीं आदमी इनको देखकर गन्दा न हो जाय। और बड़े मजे की बात यह है कि तुम ढकते चले जाओ इनको, हजार साल से ढाँक ही रहे हो लेकिन इससे आदमी गन्दगी से मुक्त नहीं होता है। गन्दगी रोज रोज बढ़ती चली जाती है। मैं यह पूछना चाहता हूं कि अश्लील किताब, अश्लील सिनेमा के कारण आदमी कामुक होता है या कि आदमी कामुक है इसलिए अश्लील तस्वीर बनती है और पोस्टर चिपकाये जाते हैं? कौन है बुनियादी? बुनियाद में आदमी की माँग है अश्लील पोस्टर के लिए इसलिए अश्लील पोस्टर लगता है और देखा जाता है। साधु संन्यासी भी देखते हैं उसको लेकिन एक फर्क रहता है। आप उसको देखते हैं और अगर आप पकड़ लिये जाएगें देखते हुए तो समझा जायगा कि यह आदमी गंदा है। और अगर कोई साधु सन्यासी मिल जाय, और आप उससे कहें कि आप क्यों देख रहे हैं! तो वह कहेगा कि हम तो निरीक्षण कर रहे हैं, स्टडी कर रहे हैं कि लोग किस तरह अनैतिकता से बचाये जायें इसलिए अध्ययन कर रहे हैं। इतना फर्क पड़ेगा। बाकी कोई फर्क नहीं पड़ेगा, बल्कि आप बिना देखे निकल भी जायें, साधु सन्यासी बिना देखे कभी नहीं निकल सकते हैं। क्योंकि उनको वर्जना और भी ज्यादा हैं, उनका चित्त और भी वर्जित है।

एक सन्यासी मेरे पास आये। वे नौ वर्ष के थे तब दुष्टों ने उनको दीक्षा दे दी। नौ वर्ष के बच्चे को दीक्षा देना कोई भले आदमी का काम हो सकता है? नौ वर्ष का बच्चा, बाप मर गया है उसका। तो सन्यासियों को मौका मिल गया उन्होंने उनको दीक्षा दे दी। अनाथ बच्चे के साथ कोई भी दुर्व्यवहार किया जा सकता था! उनको दीक्षा दे दी गई। वह आदमी नौ वर्ष की उम्र से बेचारा सन्यसी है। अब उनकी उम्र कोई पचास साल है। वह मेरे पास रुके थे। मेरी बातें सुनकर उनकी हिम्मत बढ़ी कि मुझसे सच्ची बातें कही जा सकती हैं। इस मुल्क में सच्ची बातें किसी से भी नहीं कही जा सकतीं। सच्ची बातें कहना मत, नहीं तो फँस जाओगे। उन्होंने एक रात मुझसे कहा कि मैं बहुत परेशान हूं। सिनेमा के पास से निकलता हूं तो मुझे लगता है अन्दर पता नहीं क्या होता होगा? इतने लोग अन्दर जाते हैं, इतनी क्यू लगाये खड़े रहते हैं, जरूर कुछ न कुछ बात होगी। हालांकि मंदिर में जब मैं बोलता हूं तो मैं कहता कहता हूं कि सिनेमा जाने वाले नर्क जाएंगे। लेकिन जिनको मैं कहता हूं नर्क जाओगे, वे नर्क की धमकी से भी नहीं डरते हैं और सिनेमा जाते हैं। मुझे लगता है जरूर कुछ बात होगी।

नौ साल का बच्चा था तब वह साधु हो गया। नवें साल के बाद ही उनकी बुद्धि अटकी रह गई। उससे आगे विकसित नहीं हुई, क्योंकि जीवन के अनुभव से उन्हें तोड़ दिया गया। नौ साल के बच्चे के भीतर जैसे भाव उठें कि सिनेमा के भीतर क्या हो रहा है ऐसे उनके मन में भी उठता है। लेकिन किससे कहें? मुझसे कहा, तो मैंने उनसे कहा कि सिनेमा दिखला दूं आपको? वे बोले कि अगर दिखला दें तो बड़ी कृपा होगी। झंझट छूट जाए यह प्रश्न मिट जाए, कि क्या है वहां। एक मित्र को मैंने बुलाया कि इनको ले जाओ। वह मित्र बोले कि मैं झंझट में नहीं पड़ता। कोई देख ले कि मैं साधु को लाया हूं, तो मैं झंझट में पड़ जाऊँगा। अँग्रेजी फिल्म दिखाने जरूर ले जा सकता हूं इनको, क्योंकि वह मिलिट्री एरिया में है और उधर साधु-वाधु मानने वाले भक्त भी न होंगे। वहां मैं इनको ले जा सकता हूं। पर

वे साधु अँग्रेजी नहीं जानते थे। फिर भी कहने लगे कोई हर्ज नहीं कम से कम देख तो लेंगे कि क्या मामला है।

यह चित्त है। और यही चित्त वहां गाली देगा मंदिर में बैठकर कि नर्क जाओगे अगर अश्लील पोस्टर देखोगे तो। यह बदला ले रहा है। वह तिरछा देखकर निकल गया आदमी बदला ले रहा है। जिसने सीधा देखा उनसे बदला ले रहा है। लेकिन सीधा देखने वाले मुक्त भी हो सकते हैं। तिरछा देखने वाले मुक्त कभी नहीं होते। अश्लील पोस्टर इसलिए लग रहे हैं, अश्लील किताबें इसलिए पढ़ी जा रही हैं, लड़के अश्लील गालियां इसलिए बक रहे हैं, अश्लील कपड़े इसलिए पहने जा रहे हैं क्योंकि तुमने जो मौलिक था और स्वाभाविक था अस्वीकार कर दिया है। उसकी अस्वीकृति के परिणाम में यह सब गलत रास्ते खोजे जा रहे हैं। जिस दिन दुनिया में सेक्स स्वीकृत होगा जैसे कि भोजन स्वीकृत है, स्नान स्वीकृत है, उस दिन दुनिया में अश्लील पोस्टर नहीं लगेंगे, अश्लील किताबें नहीं छपेंगी, अश्लील मंदिर नहीं बनेंगे। क्योंकि जैसे जैसे वह स्वीकृत होता जाएगा, अश्लील पोस्टरों को बनाने की कोई जरूरत नहीं रह जाएगी। अगर किसी समाज में भोजन वर्जित कर दिया जाय कि भोजन छिपकर खाना, कोई देख न ले! अगर किसी समाज में यह हो कि भोजन करना पाप है, तो भोजन के पोस्टर सड़कों पर लगने लगेंगे फौरन। क्योंकि आदमी तब पोस्टरों से भी तृप्ति पाने की कोशिश करेगा। पोस्टर से तृप्ति तभी पायी जाती है जब जिन्दगी तृप्ति देना बन्द कर देती है, और जिन्दगी में तृप्ति पाने के द्वार बन्द होते है। यह जो इतनी अश्लीलता और कामुकता और इतनी सेक्सुअलिटी है यह सारी की सारी वर्जना का अंतिम परिणाम है। मैं जानने वाले युवकों से कहना चाहूंगा कि तुम जिस दुनिया को बनाने में संलग्न हो उसमें सेक्स को वर्जित मत करना अन्यथा आदमी और भी कामुक से कामुक होता चला जाएगा। मेरी यह बात देखने में बड़ी उल्टी लगेगी। अखबार वाले और नेतागण चिल्ला-चिल्लाकर घोषणा करते हैं कि मैं लोगों में काम का प्रचार कर रहा हूं।। सचाई उल्टी है जबकि मैं लोगों को काम से मुक्त करना चाहता हूं और प्रचार वे कर रहे हैं। लेकिन उनका प्रचार दिखाई नहीं पड़ता। क्योंकि हजारों साल की परम्परा से उनकी बातें सुन-सुनकर हम अन्धे और बहरे हो गये हैं। हमें ख्याल ही नहीं रहा कि वे क्या कर रहे हैं। मन के सूत्रों का, मन के विज्ञान का कोई बोध ही नहीं रहा कि वे क्या कर रहे हैं, वे क्या करवा रहे हैं,। इसीलिए आज पृथ्वी पर जितना कामुक आदमी भारत में है उतना कामुक आदमी पृथ्वी के किसी कोने में नहीं है।

मेरे एक डाक्टर मित्र इंग्लैंड एक मेडिकल कांफ्रेंस में भाग लेने गये थे। व्हाइट पार्क में उनकी सभा होती थी। कोई पांच सौ डाक्टर इकट्ठे थे। बातचीत चलती थी। खाना पीना चलता था। लेकिन पास की एक बेंच पर युवक और एक युवती गले में हाथ डाले अत्यंत प्रेम में लीन आखें बन्द किये बैठे थे। उन मित्र के प्राणों में बेचैनी होने लगी। भारतीय प्राण में चारों तरफ झांकने का मन होने लगा।। अब खाने में उनका मन न रहा। अब चर्चा में उनका रस न रहा। वे बार बार लौट-कर उस बेन्च की तरफ देखने लगे; पुलिस क्या कर रही है? वह बन्द क्यों नहीं करती यह सब? यह कैसा अश्लील देश है? यह लड़के और लड़की आंख बन्द किये हुए चुपचाप पांच सौ लोगों की भीड़ के पास ही बेन्च पर बैठे हुए प्रेम प्रगट कर रहे हैं! कैसे लोग हैं यह क्या हो रहा है? यह बर्दाश्त के बाहर है। पुलिस क्या कर रही है? बार बार वह वहां देखते। पड़ोस के एक आस्ट्रेलियन डाक्टर ने उनको हाथ से इशारा किया और कहा; वहां बार बार मत देखिए, नहीं तो पुलिस वाला आपको यहां से उठाकर ले जाएगा। वह अनैतिकता का सबूत है। यह दो व्यक्तियों की निजी जिन्दगी की बात है और वे दोनों व्यक्ति इसीलिए पांच सौ लोगों की भीड़ के पास भी शांति से बैठे हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि यहां सज्जन लोग इकट्ठे हैं कोई देखेगा नहीं, किसी को प्रयोजन भी क्या है?

आपका यह देखना बहुत गर्हित है, बहुत अशोभन है, बहुत अशिष्ट है। यह अच्छे आदमी का सबूत नहीं है। आप पांच सौ लोगों को देख रहे हैं,कोई फिक्र नहीं कर रहा

है। क्या प्रयोजन है किसी को ? यह उनकी अपनी बात है और दो व्यक्ति इस उम्र में प्रेम करें तो पाप क्या है ? और प्रेम में वे आंख बंद करके पास पास बैठे हों तो हर्जा क्या है ? आप क्यों परेशान हो रहे हैं ? न तो कोई आपके गले में हाथ डाले हुए है न कोई आपसे प्रेम कर रहा है।

वह मित्र मुझसे लौटकर कहने लगे कि मैं इतना घबरा गया कि ये कैसे लोग हैं ! लेकिन धीरे धीरे उनकी समझ में यह बात पड़ी कि गलत वे ही थे। हमारा पूरा मुल्क ही एक दूसरे के घर में, दरवाजे में की होल रहता है न, उसमें से झांक रहा है—कहां क्या हो रहा है, कौन क्या कर रहा है ? कौन कहां जा रहा है, कौन किसके साथ है ? कौन किसके गले में हाथ डाले है, कौन किसका हाथ हाथ में लिए है ? क्या बदतमीजी है, कैसी संस्कारहीनता है । यह सब क्या है। यह क्या है। यह क्यों हो रहा है ? यह हो रहा है इसलिए कि भीतर वह जिसको दबाये है वह सब तरफ से दिखाई पड़ रहा है, वही दिखाई पड़ रहा है। युवकों से मैं कहना चाहता हूं तुम्हारे माँ बाप, तुम्हारे पुरखे, तुम्हारे हजारों साल की पीढ़ियाँ सेक्स से भयभीत रही हैं। तुम भयभीत मत रहना। तुम समझने की कोशिश करना उसे। तुम पहचानने की कोशिश करना। तुम बात करना। तुम सेक्स के सम्बन्ध में आधुनिक जो नई खोजें हुई हैं उनको पढ़ना, चर्चा करना और समझने की कोशिश करना कि क्या है सेक्स ? क्या है सेक्स का मेकेनिज्म ? उसका यंत्र क्या है ? क्या है उसकी आकाँक्षा ? क्या है प्यास ? क्या है प्राणों के भीतर छिपा हुआ राज ? इसको समझाना। इसकी सारी की सारी वैज्ञानिकता को पहचानना। इससे भागना मत, एस्केप मत करना, आँख बंद मत करना और तुम हैरान हो जाओगे, तुम जितना समझोगे उतने ही मुक्त हो जाओगे। तुम जितना समझोगे तुम उतने ही स्वस्थ हो जाओगे। तुम जितना सेक्स के ऐक्ट को समझ लोगे उतना ही सेक्स के फिक्शन से तुम्हारा छुटकारा हो जायगा। तथ्य को समझते ही आदमी कहानियों से मुक्त हो जाता है और जो तथ्य से बचता है वह कहानियों में भटक जाता है। कितनी सेक्स की कहानियां चलती हैं ! और कोई मजाक ही नहीं है हमारे पास बस एक ही मजाक है कि सेक्स की तरफ इशारा करें और हंसें ! हद हो गई। जो आदमी सेक्स की तरफ इशारा करके हंसता है वह आदमी बहुत ही क्षुद्र है। सेक्स की तरफ इशारा करके हंसने का क्या मतलब है ? उसका एक ही मतलब है कि आप बात समझते ही नहीं। बच्चे तो बहुत तकलीफ में हैं कि उन्हें कौन समझाये, किससे वे बातें करें, कौन सारे तथ्यों को सामने रखे ? उनके प्राणों में जिज्ञासा है, खोज है, लेकिन उसको दबाये चले जाते हैं, रोके चले जाते हैं। उसके दुष्परिणाम होते हैं। जितना रोकते हैं उतना मन वहां दौड़ने लगता है और इस रोकने और दौड़ने में सारी शक्ति और ऊर्जा नष्ट हो जाती है—यह मैं आपसे कहना चाहता हूं। जिस देश में भी सेक्स की स्वस्थ्य रूप से स्वीकृति नहीं होती उस देश की प्रतिभा का जन्म ही नहीं होता है। पश्चिम में तीन सौ वर्षों में जो जीनियस पैदा हुआ है, जो प्रतिभा पैदा हुई है वह सेक्स के तथ्य की स्वीकृति से पैदा हुई है। जैसे ही सेक्स स्वीकृत हो जाता है वैसे ही जो शक्ति हमारी लड़ने में नष्ट होती है वह शक्ति मुक्त हो जाती है, वह रिलीज हो जाती है, और उस शक्ति को फिर हम रूपान्तरित करते हैं पढ़ने में, खोज में, अविष्कार में, कला में, संगीत में, साहित्य में। और अगर वह शक्ति सेक्स में ही उलझी रह जाय, जैसा कि सोच लें कि वह आदमी जो कपड़े में उलझ गया है—नसरुद्दीन, वह कोई विज्ञान के प्रयोग कर सकता था बेचारा ? कि वह कोई सत्य का सृजन कर सकता था ? कि वह कोई मूर्ति का निर्माण कर सकता था ? वह कुछ भी करता कपड़े ही कपड़े उसके चारों तरफ घूमते रहते और वह कुछ भी नहीं कर पाता।

भारत के युवक के चारों तरफ सेक्स घूमता रहता है पूरे वक्त। और इस घूमने के कारण उसकी सारी शक्ति इसी में लीन और नष्ट हो जाती है। जब तक भारत के युवक की सेक्स के इस रोग से मुक्ति नहीं होती तब तक भारत के युवक की प्रतिभा का जन्म

नहीं हो सकता है। प्रतिभा का जन्म तो उसी दिन होगा जिस दिन इस देश में सेक्स की सहज स्वीकृति हो जायगी हम उसे जीवन के एक तथ्य की तरह अंगीकार कर लेंगे—प्रेम से, आनन्द, से निन्दा से नहीं, घृणा से नहीं। और निन्दा और घृणा का कोई कारण भी नहीं है। वह जीवन का अद्भुत रहस्य है। वह जीवन की अद्भुत मिस्ट्री है। उससे कोई घबराने की, भागने की जरूरत नहीं है। जिस दिन हम इसे स्वीकार कर लेंगे उस दिन इतनी बड़ी ऊर्जा मुक्त होगी भारत में कि हम न्यूटन पैदा कर सकेंगे, हम आईंस्टीन पैदा कर सकेंगे। उस दिन हम भी चांद तारों की यात्रा करेंगे लेकिन अभी नहीं। अभी तो हमारे लड़कों को लड़कियों के स्कर्ट के आसपास परिभ्रमण करने से ही फुर्सत नहीं है, चांद तारों का परिभ्रमण कौन करेगा? लड़कियां चौबीस घण्टे अपने कपड़ों को चुस्त से चुस्त करने की कोशिश करें या कि चांद तारों का विचार करें? यह नहीं हो सकता। यह सब सेक्सुअलिटी का रूप है। हम शरीर को नंगा देखना और दिखाना चाहते हैं। इसलिए कपड़े चुस्त से चुस्त होते चले जाते हैं। सौन्दर्य की बात नहीं है यह, क्योंकि कई बार चुस्त कपड़े शरीर को बहुत बेहूदा और भोंड़ा बना देते हैं। हां, किसी शरीर पर चुस्त कपड़े सुन्दर भी हो सकते हैं। किसी शरीर पर ढीले कपड़े सुंदर हो सकते हैं और ढीले कपड़ों की शान ही और है। ढीले कपड़ों की गरिमा और है। ढीले कपड़ों की पवित्रता और है। लेकिन वह हमारे ख्याल में नहीं आयगा। हम समझेंगे, यह फैशन है, यह कला है, अभिरुचि है, टेस्ट है। नहीं, टेस्ट वेस्ट नहीं है, अभिरुचि भी नहीं है। वह जो, जिसको हम छिपा रहे हैं भीतर वह दूसरे रास्तों से प्रगट होने की कोशिश कर रहा है। लड़के लड़कियों का चक्कर काट रहे हैं, लड़कियां लड़कों के चक्कर काट रही हैं! तो चांद तारों का चक्कर कौन काटेगा, कौन जायेगा वहाँ? और प्रोफेसर्स? वे बेचारे तो बीच में पहरेदार बने हुए खड़े हैं ताकि लड़के लड़कियां एक दूसरे का चक्कर न काट सकें! कुछ और उनके पास काम नहीं है। जीवन के और किन्हीं सत्यों की खोज में उन्हें इन बच्चों को नहीं लगाना है। बस, ये सेक्स से बच जायें, इतना ही काम कर दें, तो उन्हें लगता है कि उनका काम पूरा हो गया।

यह सब कैसा रोग है! यह कैसा डिसीज्ड माईंड है हमारा? हम सेक्स के तथ्यों की सीधी स्वीकृति के बिना इस रोग से मुक्त नहीं हो सकते यह महान् रोग है। इस पूरी चर्चा में मैंने यह कहने की कोशिश की है कि मनुष्य को क्षुद्रता से ऊपर उठना है। जीवन के सारे साधारण तथ्यों से जीवन के बहुत ऊंचे तथ्यों की खोज करनी है। सेक्स सब कुछ नहीं है। परमात्मा भी है दुनियां में। लेकिन उसकी खोज कौन करेगा? सेक्स ही सब कुछ नहीं है इस दुनियां में, सत्य भी है। उसकी खोज कौन करेगा? यहीं जमीन से अटके अगर हम रह जाएंगे तो आकाश की खोज कौन करेगा? पृथ्वी के कंकड़ पत्थरों को हम खोजते रहेंगे तो चांद तारों की तरफ आखें कौन उठायेगा? पता भी नहीं होगा उनको जिन्होंने पृथ्वी की ही तरफ आंख लगाकर जिन्दगी गुजार दी, उन्हें पता भी नहीं चलेगा कि आकाश में तारे भी हैं, आकाशगंगा भी है, रात्रि के सन्नाटे में मौन सन्नाटा भी है आकाश का। बेचारे कंकड़ पत्थर बीनने वाले लोग, उन्हें पता भी कैसे चलेगा कि और आकाश भी है! और अगर कभी कोई कहेगा कि आकाश भी है जहाँ चमकते हुए तारे भी हैं, तो वे कहेंगे सब झूठी बातचीत है, कोरी कल्पना है। सच में तो केवल पत्थर ही पत्थर हैं। हां कहीं रंगीन पत्थर भी होते हैं। बस इतनी ही जिन्दगी है। नहीं, मैं कहता हूं इस पृथ्वी से मुक्त होना है ताकि आकाश दिखाई पड़ सके। शरीर से मुक्त होना है ताकि आत्मा दिखाई पड़ सके और सेक्स से मुक्त होना है ताकि समाधि तक मनुष्य पहुंच सके लेकिन उसतक हम नहीं पहुंच सकेंगे, अगर हम सेक्स से बंधे रह जाते हैं तो। और सेक्स से हम बंध गये हैं। क्योंकि हम सेक्स से लड़ रहे हैं। लड़ाई बाँध देती है, समझ मुक्त कर देती है। अण्डरस्टेंडिंग चाहिए, समझ चाहिए। सेक्स के पूरे रहस्य को समझो बात करो, विचार करो मुल्क में हवा पैदा करो कि हम इसे छिपायेंगे नहीं, समझेंगे। अपने पिता से बात करो, अपनी मां से बात करो वैसे वे बहुत घबरायेंगे। अपने प्रोफेसर्स से बात करो, अपने कुलपति को पकड़ो और कहो कि हमें समझाओ।

जिन्दगी के सवाल हैं ये। वे भागेंगे, वे डरे हुए लोग हैं, डरी हुई पीढ़ी से आये हैं। उनको पता भी नहीं है कि जिन्दगी बदल गई है। अब डर से काम नहीं चलेगा। जिन्दगी का एनकाउंटर चाहिए, मुकाबला चाहिए। जिन्दगी से लड़ने और समझने की तैयारी करो। मित्रों का सहयोग लो, शिक्षकों का सहयोग लो, मां बाप का सहयोग लो। वह मां गलत है जो अपनी बेटी को और अपने बेटे को वे सारे राज नहीं बता जाती जो उसने जाने, क्योंकि उसके बताने से बेटा और उसकी बेटी भूलों से बचेंगे। उसके न बताने से उनसे भी उन्हीं भूलों के दोहराने की सम्भावना है, जो उसने खुद की होंगी। वह बाप गलत है जो अपने बेटे को अपनी प्रेम की और अपनी सेक्स की जिन्दगी की सारी बातें नहीं बता देता, क्योंकि बता देने से बेटा उन भूलों से बच जाएगा जो उसने की हैं। शायद बेटा ज्यादा स्वस्थ हो सकेगा। लेकिन नहीं बाप इस तरह जियेगा कि बेटा को पता चले कि उसने कभी प्रेम ही नहीं किया। वह इस तरह खड़ा रहेगा आंखें पत्थर की बना के, कि इसकी जिन्दगी में कभी कोई औरत इसे अच्छी ही नहीं लगी।

यह सब झूठ है। यह सरासर झूठ है। तुम्हारे बाप ने भी प्रेम किया है। उनके बाप ने भी प्रेम किया था। सब बाप प्रेम करते रहे हैं, लेकिन सब बाप धोखा देते रहे हैं। तुम भी प्रेम करोगे और बाप बनकर धोखा दोगे। यह धोखे की दुनियां अच्छी नहीं है। दुनिया साफ और सीधी होनी चाहिये। जो बाप ने अनुभव किया है वह बेटे को दे जाय। जो मां ने अनुभव किया है वह बेटी को दे जाय। जो ईर्ष्या उसने अनुभव की हैं, जो प्रेम अनुभव किये हैं, जो गलतियां उसने की हैं, जिन गलत रास्तों पर वह भटकी है और भरमी है उस सबकी कथा को अपनी बेटी को दे जाये। जो नहीं दे जाते हैं वे बच्चे का हित नहीं करते हैं। अगर हम ऐसा कर सकें तो दुनिया ज्यादा साफ होगी। हम दूसरी चीजों के सम्बन्ध में साफ हो गये हैं। शायद केमेस्ट्री के सम्बन्ध में कोई बात जाननी हो तो सब साफ है। फिजिक्स के सम्बन्ध में कोई बात जाननी हो तो सब साफ है। भूगोल के बाबद् जाननी हो तो सब साफ है। नक्शे बने हुए हैं। लेकिन आदमी के बाबद् साफ नहीं है, कहीं कोई नक्शा नहीं है। आदमी के बाबद् सब झूठ है। इसलिए दुनियां सब तरफ से विकसित हो रही है सिर्फ आदमी विकसित नहीं हो रहा है। आदमी के सम्बन्ध में भी जिस दिन चीजें साफ साफ देखने की हिम्मत हम जुटा लेंगे उस दिन आदमी का भी विकास निश्चित है।

यह थोड़ी सी बातें मैंने कहीं। मेरी बातों को सोचना। मान लेने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि हो सकता है कि जो में कहूं बिल्कुल गलत हो। तो सोचना समझना, कोशिश करना। हो सकता है कोई सत्य तुम्हें दिखाई पड़े। जो सत्य तुम्हें दिखाई पड़ जाएगा वही तुम्हारे जीवन में प्रकाश का दिया बन जाएगा।

ध्यान के लिए पूछते हो कि क्या करें? कुछ भी न करो—बस शांति से श्वांस प्रश्वाँस के प्रति जागो, होश पूवक श्वांस पथ को देखो, श्वाँस के आने जाने के साक्षी रहो, यह कोई श्रम पूर्ण चेष्टा न हो वरन् शाँत और शिथिल विश्रामपूर्ण बोध मात्र हो, और फिर तुम्हारे अनजाने ही, सहज और स्वाभाविक रूप से, एक अत्यंत प्रसादपूर्ण स्थिति में तुम्हारा प्रवेश होगा. इसका भी पता नहीं चलेगा कि कब तुम प्रविष्ट हो गये हो. अचानक ही तुम अनुभव करोगे कि तुम वहाँ हो जहां कभी नहीं थे।

अमृत कण : बुद्धि नहीं, हृदय ही मार्ग है

बुद्धि में अर्थ हो सकता है, अनुभूति नहीं। अनुभूति तो प्राणों के प्राण हृदय में होती है। और अनुभूति शून्य अर्थ मृत होता है। ऐसे मृत अर्थ और शब्द ही हमारे मस्तिष्कों में गूंज रहे हैं और उनके बोझ से हम पीड़ित हैं। वे हमें मुक्त नहीं करते हैं, वरन् वे ही हमारे बंधन हैं। निर्भार और मुक्त होने के लिये तो हृदय की अनुभूति चाहिए। इसलिये मैं कहता हूं कि सत्य का अर्थ और सत्य की व्याख्या मत खोजो। खोजो सत्य की अनुभूति और जीवन। सत्य में डूबो और स्मरण रखो कि जो अशेष भाव से सत्य में डूबते हैं वे ही असत्य से ऊबर पाते हैं। बुद्धि ऊपर ऊपर तैराती है लेकिन हृदय तो पूरा ही डुबा देता है। बुद्धि नहीं, हृदय ही मार्ग है।

सत्य के अनुभव और सत्य के संबंध में दिये गये वक्तव्यों में बहुत भेद है। वक्तव्य में हम वक्तव्य के बाहर होते हैं, लेकिन अनुभव में, अनुभव के भीतर और अनुभव से एक। इसीलिए जिन्हें अनुभव है, उन्हें वक्तव्य देना असंभव ही हो जाता है। वक्तव्य की संभावना अनुभव के अभाव की द्योतक है। लोग मुझसे पूछते हैं : "सत्य क्या है ?" मौन रह जाने के सिवाय मैं और क्या कह सकता हूं ?

ज्ञान रहस्य की समाप्ति नहीं है, वस्तुतः, ज्ञान के साथ ही रहस्य का संपूर्ण उद्घाटन होता है। और फिर तो सिर्फ रहस्य ही रहस्य रह जाता है। ज्ञान है रहस्य का बोध, रहस्य की स्वीकृति, रहस्य से मिलन, रहस्य के साथ आनंदमग्न जीवन, रहस्य से, रहस्य में और रहस्य के द्वारा। जहाँ स्व तो मिट जाता है और मात्र रहस्य ही रह जाता है, जानना कि परमात्मा की पवित्र भूमि में प्रवेश हो गया है। और यह भी जानना कि स्व के मिट जाने से बड़ा कोई रहस्य नहीं है, क्योंकि स्व तो मिट जाता है लेकिन साथ ही स्वयं की सत्ता अपनी परिपूर्ण गरिमा में प्रगट भी हो जाती है।

●●●

मानसिक गुलामी

(अहमदाबाद जीवन जाग्रति केंद्र के सौजन्य से)

एक व्यक्ति एक ऐसे देश में है जहाँ के लोग उसकी भाषा नहीं समझ पाते और न उसकी भाषा दूसरे लोग ही समझते हैं। उस देश की राजधानी में एक बहुत बड़े महल के सामने खड़ा होकर उसने किसी से पूछा, यह भवन किसका है। उस आदमी ने कहा, आप क्या पूछ रहे हैं, वह आदमी आपकी भाषा नहीं समझता, लेकिन उस परदेशी ने समझा, किसी केनिवर्सटन नाम के आदमी का यह मकान है। उसके मन में बड़ी ईर्ष्या उमड़ी उस आदमी के प्रति जिसका नाम केनिवर्स्टन था। इतना बड़ा भवन था, इतना विशाल कि जिसमें हजारों लोग आते जाते थे। इतनी ईर्ष्या हुई केनिवर्सटन के प्रति और केनिवर्सटन कोई था ही नहीं। उस आदमी ने सिर्फ इतना कहा था कि मैं समझा नहीं। फिर वह आदमी घूमता हुआ बन्दरगाह पर पहुंचा था। एक बड़े जहाज से बहुमूल्य सामान उतारे जा रहे थे। उसने पूछा किसका सामान उतर रहा है? एक आदमी ने कहा केनिवर्सटन। उस आदमी ने कहा, समझा नहीं आप क्या पूछते हैं।

उस परदेशी की ईर्ष्या और भी बढ़ गयी थी जिसका वह भवन था, उसी आदमी की यह बहुमूल्य सारी चीजें उतारी जा रही हैं और वह आदमी था ही नहीं। उसका मन आग से जलने लगा था। काश, वह भी इतना धनी होता और जिस रास्ते पर लौटता था उदास, चिन्तित, दुखी, ईर्ष्या से भरा तो उसने देखा कि किसी की अर्थी जा रही है और हजारों लोग उस अर्थी के इर्द गिर्द इकट्ठे हैं। निश्चित ही जो आदमी मर गया है वह बड़ा आदमी होगा। उसके मन में अचानक धारणा बनी कि क्या केनिवर्सटन मर तो नहीं गया। उसने आते हुये एक आदमी से पूछा, कौन मर गया है। उस आदमी ने कहा केनिवर्सटन याने उसने कहा, मैं समझा नहीं। उस आदमी ने अपनी छाती पीट ली, निश्चित ही ईर्ष्या हुई उस आदमी से। लेकिन बेचारा मर गया। इतना बड़ा महल, इतनी बढ़िया कारें, इतनी धन दौलत, यह सब व्यर्थ पड़ा है लेकिन वह आदमी मर गया है जो आदमी था ही नहीं।

बहुत बार मुझे ऐसी ही हालत अपने संबंध में मालूम पड़ती है। ऐसा लगता है, निश्चित परदेश में हूं। न आप मेरी भाषा समझते हैं, न आपकी भाषा मैं समझता हूं। जो कहता हूं, जब आपमें उसकी प्रतिध्वनि सुनायी पड़ती है तो बहुत हैरान हो जाता हूं जो कि मैंने कभी कहा ही नहीं था। जब आप कुछ पूछते हैं तो जो लोग समझते हैं कि आपने पूछा है, जब मैं उत्तर देता हूं और आपकी आँखों में झांकता हूं तो पता चलता है कि यह तो आपने पूछा ही नहीं था।

एक अजनबी, एक आउट साइडर, एक परदेशी की तरह मैं अनुभव करता हूं। लेकिन सारी कोशिश करता हूं समझाने की, वह जो कुछ मुझे दिखायी पड़ता है। मेरी यह भी इच्छा नहीं है कि जो मुझे दिखायी पड़ता है वह आप मान लो क्योंकि जो आदमी भी किसी से कहता है कि मेरी बात मान लो वह आदमी ही मनुष्य जाति का दुश्मन है क्योंकि जब भी मैं कहता हूं कि मुझे मान लो और अपने को छोड़ दो और जब आदमी किसी से यह कहता है कि खुद को छोड़ दो, वह आदमी लोगों की आत्माओं की हत्या करता है। तो जितने लोग दूसरों को मनाने के लिये आतुर हैं वे सारे लोग मनुष्य जाति के लिये खतरनाक सिद्ध होते हैं।

मैं नहीं कह रहा हूं कि आप मेरी बात मान लो। मानने का कोई सवाल नहीं है। मैं इतनी ही कोशिश करता हूं कि मेरी बात समझ लो और समझने के लिये मानना जरूरी नहीं है बल्कि जो लोग मान लेते हैं वह समझ नहीं पाते हैं। जो नहीं मानते हैं वे भी नहीं समझ पाते हैं क्योंकि मानने और न मानने की जल्दी में समझने की फुर्सत नहीं मिलती। जिस आदमी को समझना है उसे मानने और न मानने की आतुरता नहीं दिखानी चाहिये। मेरी बात को मानने से आपका कोई विकास नहीं होगा। किसी की बात मानने से किसी का कभी कोई विकास नहीं होता है लेकिन किसी की भी बात समझने से जरूर विकास होता है। क्योंकि जितना आप समझने की कोशिश करते हैं उतनी आपकी समझ विकसित हो सकती है लेकिन हम सारे लोग उत्सुक होते हैं मानने या न मानने को क्योंकि समझने में श्रम करना पड़ता है, मानने में श्रम की कोई जरूरत नहीं। और हम मानसिक रूप से इतने आलसी हो गये हैं कि हम मन से कोई भी श्रम नहीं करना चाहते इसलिये दुनिया में इतने अनुयायी दिखाई पड़ते हैं, दुनिया में इतने वाद और ईश्वर दिखाई पड़ते हैं इसलिये दुनिया में इतने गुरू दिखाई पड़ते हैं, इतने शिष्य दिखाई पड़ते हैं। जिस दिन मनुष्य मानसिक श्रम करने को राजी होगा, उस दिन दुनिया में कोई अनुयायी नहीं होगा, कोई वाद नहीं होगा, कोई गुरू, कोई शिष्य नहीं होगा।

जब तक हम मानसिक रूप से श्रम करने को राजी नहीं हैं तब तक दुनिया में यह सब नासमझियाँ जारी रहेंगी क्योंकि जो लोग काम नहीं करना चाहते हैं वे किसी दूसरे के श्रम पर ही आधारित होना चाहते हैं। वह भी एक तरह का शोषण है। मैं सोचूँ और आप मान जायें तो आपमें मेरा शोषण हुआ। मैं सोचूँ और आपको जबरदस्ती मना दूँ तो मैं आपका शोषण कर रहा हूं और दुनिया में आर्थिक शोषण इतना पैदा नहीं हुए जितना मानसिक और आध्यात्मिक शोषण है। पहले का शोषण इतना बड़ा नहीं हुआ क्योंकि किसी का पैसा छीन लेने से आप उसका कुछ भी नहीं छीनते हैं लेकिन जब किसी आदमी की आत्मा छीनी जाती है तो उसका सब कुछ छीना जाता है। सारी दुनिया आध्यात्मिक रूप से एक गुलामी में है और गुलामी का कारण है मानसिक आलस्य, भीतर हम कुछ भी नहीं करना चाहते। इसलिए कोई भी जोर से कह दे, मेरी बात मान लो, मैं भगवान हूं या चार नासमझों को इकट्ठा कर लें और बाजार में कहें कि बहुत बड़े महात्मा हमारे गाँव में आ रहे हैं तो हम मानने के लिये तैयार हो जाते हैं। हम मानने को तैयार ही बैठे हैं। क्या हम सोचने को कभी भी तैयार नहीं होंगे? मनुष्य जाति का जन्म नहीं होगा अगर मनुष्य सोचने को तैयार नहीं होगा लेकिन हम सोचने को बिल्कुल तैयार नहीं हैं। मेरा कोई आग्रह नहीं है कि मैं जो कहता हूं उसे मानें और इसलिये नहीं मानें इसका भी आग्रह नहीं है। आग्रह सिर्फ इतना ही है कि जो मैं कहता हूं उसे सुनें, समझें। वही मुश्किल हो गया क्योंकि भाषा ही ऐसी मालूम पड़ती है। मैं कोई और भाषा बोलता हूं, आप कोई और भाषा समझते हैं।

एक गाँव में गया हुआ था। एक मित्र आये और कहने लगे, लोकतंत्र के सम्बन्ध में आपका क्या ख्याल है, डेमोक्रेसी के बाबत आप क्या सोचते हैं। मैंने कहा, जिसे तुम लोकतंत्र कहते हो और अगर यही लोकतंत्र है तो इससे बेहतर है कि मुल्क तानाशाही में चला जाय। उन्होंने जाकर गाँव में खबर कर दी कि मैं तानाशाही को पसन्द करता हूं। यह ऐसे ही हुआ जैसे कोई बीमार आदमी मेरे पास आये खाँसता, खँखारता और मुझसे पूछे कि मैं क्या करूँ तो उससे मैं कहूं, इस तरह बीमार जिन्दा रहने की बजाय तो बेहतर है कि तुम मर जाओ और वह आदमी गाँव में खबर कर दे कि मेरा मानना ही है कि सब लोगों को मर जाना चाहिए। लौटकर उस गाँव में पता चला कि मैं लोकतंत्र का दुश्मन हूं और तानाशाही के पक्ष में हूं और यही नहीं, यह भी पता चला कि मैं खुद ही तानाशाह होना चाहता हूं। तब सिवाय इसके मानने के क्या रास्ता रहा कि भाषायें हम शायद दो तरह की बोलते हैं। मुझसे ज्यादा लोकतंत्र को प्रेम करने वाला आदमी खोजना थोड़ा मुश्किल है। मैं तो लोकतंत्र को इतना प्रेम करता हूं और चाहता हूं कि दुनिया में कोई तंत्र ही न रह जाय क्योंकि जब तक तंत्र

है, लोकतंत्र नहीं हो सकता है। कोई भी तंत्र होगा ऊपर तो आदमी को गुलाम बनायेगा कम या ज्यादा, लेकिन तंत्र होगा तो गुलाम बनायेगा। तंत्र होगा, शासन होगा तो आदमी किसी न किसी तरह की गुलामी में रहेगा कम और ज्यादा दूसरी बात है।

जिस दिन तंत्र नहीं होगा उस दिन जगत में ठीक लोकतंत्र होगा। जिस दिन शासन नहीं होगा उसी दिन दुनिया में ठीक शासन आयेगा ऐसा कहना चाहिये। लेकिन मुझे उस गाँव में जाकर पता चला कि मैं खुद ही तानाशाह होना चाहता हूं, मैं तानाशाहों को पसन्द करता हूं। न केवल अखबार में खबर निकली है, एक सज्जन ने पूरी किताब ही लिख दी है इस बात के ऊपर कि मैं तानाशाह होना चाहता हूं। तब सिवाय इसके कि हम अलग-अलग भाषायें बोलते हैं और क्या कहा जा सकता है।

मैं एक गाँव में ठहरा हुआ था, जिस घर में रुका हुआ था उस गाँव के कलेक्टर की पत्नी मुझसे मिलने आई। जब कालेज में पढ़ता था तो वह महिला मेरे साथ पढ़ती थी। सर्दी की रात थी, मैं कम्बल अपने पैर पर डालकर बिस्तर पर बैठा था, वह मुझसे मिलने आई और गले मिल गई। न मालूम बचपन की और कालेज के दिनों की बहुत सी स्मृतियाँ सुनाने लगी। बैठ गई पलंग पर। मैंने उससे कहा सर्दी है, कम्बल उसने अपने पैर पर डाल दिये। हम दोनों उस पलंग पर कम्बल डाले बैठे रहे। दूसरे दिन सभा में एक आदमी ने चिट्ठी लिखकर मुझे पूछा कि कल रात एकांत में एक स्त्री के साथ एक ही बिस्तर पर एक ही कम्बल में आप थे या नहीं? हाँ या ना में जवाब दीजिये और मैं दूसरा तर्क पसन्द नहीं करता। या तो हाँ कहिये या ना कहिये। मैंने कहा, बिलकुल था, हाँ। घर लौटकर आया, घर के लोग कहने लगे, आप बिल्कुल पागल हैं, आपने हाँ कहा, लोग क्या समझेंगे। मैंने कहा, बात सच्ची थी, एक बिस्तर पर थे, एक ही कम्बल में थे, रात भी थी। उन्होंने कहा, यह सवाल नहीं है। उनका मतलब आप नहीं समझे। उनका मतलब बिल्कुल दूसरा था।

सारे गाँव में क्या अफवाह हो गई है आपको पता नहीं है कि आप एक स्त्री के साथ एक ही बिस्तर पर एक ही कम्बल में थे। मैंने कहा, कि हम भाषायें अलग बोलते हैं और क्या समझा जा सकता है। क्या समझा जा सकता है इसके सिवाय कोई उपाय नहीं हैं। फिर मुझसे लोग पूछते हैं जवाब दीजिये और जवाब गोल मोल नहीं देना चाहिये, वह हाँ और ना में जवाब चाहते हैं। तब मैं बहुत सचेष्ट भी होता हूं, रोता भी हूं और हँसता भी हूं। कैसे लोग हैं। तब मुझे याद आती है एक फकीर की बात। फकीर था बोधिधर्म, वह हिन्दुस्तान से चीन गया था, लेकिन चीन में ९ वर्ष तक वह आदमी

कई बार मुझे भी लगता है कि अगर यही खींच-तान भाषा जारी रहती है तो बजाय आपकी तरफ मुँह करने के दीवाल की तरफ मुँह कर लेना उचित होगा। लेकिन अभी मैं हार नहीं गया हूं और निराश नहीं हो गया हूं, अभी कोशिश जारी रखूँगा। मानना नहीं चाहता हूं कि आप दीवाल हैं। मानने का यही मन होता है कि आप भी एक मनुष्य हैं और भीतर एक विचार-शील आत्मा है।

दीवाल की तरफ मुँह किये बैठा रहा। अगर आप उससे मिलने जाते तो बहुत अशिष्ट मालूम पड़ता वह आदमी, क्योंकि वह आपकी तरफ मुँह नहीं करता था, वह दीवाल की तरफ मुँह रखता था, आपकी तरफ पीठ रखता था। वह जब भी बैठता दीवाल की तरफ मुँह करके बैठता था। चीन का सम्राट उससे मिलने आया। उसने कहा, यह क्या बदतमीजी है। मैं तुम्हारे पीछे खड़ा हूं और तुम दीवाल की तरफ मुँह किये बैठे हो। उस बोधिधर्म ने कहा कि हजारों अनुभवों के बाद इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि दीवाल की तरफ मुँह करना ठीक होता है क्योंकि

आदमी मुझे दीवाल की तरह मालूम पड़ते हैं, कोई सुनता ही नहीं तो तुम्हारी तरफ मुँह करूँ उसमें मुझे ज्यादा बदतमीजी मालूम पड़ती है क्योंकि तुम आदमी कम दीवाल ज्यादा मालूम पड़ते हो और हो सकता है कि मेरी आँखों में तुम्हें ख्याल आ जाय कि यह आदमी मुझे दीवाल समझ रहा है तो मैं दीवाल की तरफ मुँह रखता हूं। जब कोई आदमी आयेगा तो मैं उसकी तरफ मुँह कर लूँगा। लेकिन तुम दीवाल हो। सम्राट ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि पहली बार एक आदमी मुझे मिला जिसकी कुछ बात सुनने योग्य थी लेकिन शायद मैं सुनने योग्य नहीं था इसलिये उसने मेरी तरफ मुँह नहीं किया।

बोधिधर्म ने ठीक ही किया। कई बार मुझे भी लगता है कि अगर यही खींच-तान भाषा जारी रहती है

गांधी के कोई दुश्मन हैं इस मुल्क में तो गोडसे से भी ज्यादा गांधीवादी गांधी के दुश्मन हैं। गोडसे ने गांधी के शरीर की हत्या की, गांधीवादी गांधी की आत्मा की हत्या करने पर पूरी तरह उतारू हैं।

तो बजाय आपकी तरफ मुँह करने के दीवाल की तरफ मुँह कर लेना उचित होगा। लेकिन अभी मैं हार नहीं गया हूं और निराश नहीं हो गया हूं, अभी कोशिश जारी रखूँगा। मानना नहीं चाहता हूं कि आप दीवाल हैं। मानने का यही मन होता है कि आप भी एक मनुष्य हैं और भीतर एक विचारशील आत्मा है। आपकी सारी कोशिश के बावजूद आशा को जगाये रहता हूं और कोशिश करता हूं कि शायद किसी न किसी दिन बात सुनाई पड़ जाय। लेकिन अभी तो उल्टा ही मालूम होता है।

अभी गुजरात लौटा तो बड़ी गर्मी थी। गाँव-गाँव गया तो लोगों ने कहा, आप गाँधी के दुश्मन हैं तब मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। और गाँधी के कोई दुश्मन हैं इस मुल्क में तो गोडसे से भी ज्यादा गाँधीवादी गाँधी के दुश्मन हैं। गोडसे ने गाँधी के शरीर की हत्या की, गांधीवादी गाँधी की आत्मा की हत्या करने पर पूरी तरह उतारू हैं। गोडसे की गोली के बाद भी गाँधी बच गये हैं पूरी तरह। गाँधी को वह गोली नहीं लग सकती है, लेकिन गांधीवादी गाँधी का जय जयकार करके जिस तरह की गोली मार रहे हैं उससे गाँधी का नाम भी मिट जायेगा। लेकिन वे ही लोग खबर करते हैं कि मैं गाँधी का दुश्मन हूं। तब मैं हैरान हुआ कि गाँधी से मेरी दुश्मनी क्या हो सकती है और कौन गवाह बनेगा? सिवाय गाँधी के कोई गवाह नहीं बन सकता था इस मामले में। लेकिन गवाह वे लोग हैं जो गाँधी की सब भाँति हत्या कर रहे हैं। या आपको ख्याल नहीं होगा कि दुनियाँ में आज तक जीसस की हत्या उन लोगों ने नहीं की जिन लोगों ने उसे शूली पर लटकाया। जीसस की हत्या की ईसाइयों ने जो उनके अनुयायी हैं। और सुकरात को उन्होंने नहीं मारा जिन लोगों ने सुकरात को जहर पिलाया था। सुकरात को वे लोग मार सकते हैं जो सुकरात के शिष्य होने के ख्याल में पड़ गये हैं। सुकरात मरने के करीब था तो उसके एक शिष्य क्रेटो ने पूछा कि आपको साँझ जहर दे दिया जायगा, हम आपको दफनायेंगे कैसे। इस संबंध में कुछ बताइये। सुकरात ने कहा, देखो मजा, वे मेरे दुश्मन हैं और ये मेरे मित्र हैं जो मुझे दफनाने की कोशिश कर रहे हैं। यह देखो मजा। तो मेरे मित्र मुझसे पूछते हैं, कि दफनायेंगे कैसे। वह गाँधीवादी गाँधी को दफनाने की कोशिश कर रहे हैं, वे मित्र हैं उनके। सुकरात ने बड़े मजे की बात कही थी क्रेटो को। शायद ही क्रेटो समझ पाया हो क्योंकि भाषाओं के भेद पैदा हैं। सुकरात ने कहा था, पागल क्रेटो, तुम दफनाने की कोशिश करना लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि तुम सब दफन हो जाओगे और फिर भी मैं रहूंगा और अगर तुझे कभी कोई याद भी रखेगा तो सिर्फ इसलिये कि तुमने सुकरात से प्रश्न पूछा था कि तुम कैसे दफनाओगे। और आज क्रेटो के बाबत इतना ही पता है कि उसने सुकरात को पूछा था और कुछ भी पता नहीं है।

शिष्य दफनाते हैं गुरूओं को, अनुयायी दफनाते हैं नेताओं को। पीछे चलने वाले दफनाते हैं आगे चलने वालों को। क्यों ऐसा हो जाता है लेकिन ? इसके होने के पीछे कुछ कारण हैं यह शायद ख्याल में भी न हो, कि जो आदमी भी किसी का अनुयायी बनता है वह पहली तो बात है खतरनाक है, डैंजरस है। कोई बुद्धिमान आदमी कभी किसी का अनुयायी नहीं बनता है। सिर्फ बुद्धिहीन लोग अनुयायी बनते हैं। अनुयायियों की जमात बुद्धिहीनों की जमात है। स्टुपिडिटी की जमात है। जहाँ सारे बुद्धिहीन इकट्ठे हो जाते हैं।

मैंने सुना है, एक बार एक आदमी को सत्य मिल गया। शैतान के शिष्य भागे हुए शैतान के पास गये और उससे कहा, क्या सोये हो, एक आदमी को सत्य मिल गया है। सब मुश्किल में पड़ जाओगे। शैतान ने कहा, घबराओ मत, जाकर गाँव में खबर कर दो एक आदमी को सत्य मिल गया है, किसी को अनुयायी बनना हो तो बन जाओ। शैतान के शिष्यों ने कहा इससे क्या फायदा होगा। हम भी स्वीकार करें ? शैतान ने कहा, मेरे हजारों बार का अनुभव यह है कि अगर किसी आदमी को सत्य मिला हो और उस आदमी के सत्य को खत्म करना हो तो अनुयायियों की भीड़ इकट्ठी कर लो। तुम जाओ गांव गाँव में ढ्ग्गी पीटो कि किसी आदमी को अगर सत्य गुरू चाहिए तो सत्य गुरू पैदा हो गया है। तो जितने भी बुद्धिहीन रहेंगे वे बाद में इकट्ठे हो जायेंगे और एक बुद्धिमान आदमी हजार लोगों की भीड़ में क्या कर सकता है। और यही हुआ। शैतान के शिष्यों ने गाँव गाँव मे खबर कर दी। जितने बुद्धिहीन जन थे वे सब इकट्ठे हो गये और वह भागने लगा कि मुझे बचाओ लेकिन उसे कौन बचाता है। शिष्यों ने उसे जोर से पकड़ लिया है। दुश्मन से तो आप बच सकते हैं, शिष्यों से कैसे बच सकते हैं। इसलिए अगर कभी किसी को सत्य मिल जाय तो अनुयायियो से सावधान रहना, शिष्यों से बचना। वह हमेशा तैयार हैं, शैतान उनको सिखाकर भेजता है।

गाँधी जिन्दगी भर चिल्लाते रहे कि मेरा कोई वाद नहीं हैं और अब गाँधीवादी उनके वाद की सुव्यवस्था देने की कोशिश में लगे हैं और वे रिसर्च कर रहे हैं, शोध केन्द्र बना रहे हैं, स्कालरशिप दे रहे हैं और कह रहे हैं कि गाँधी के वाद का रेखाबद्ध रूप तय करो। गाँधी के वाद को खड़ा किया जा रहा है। गाँधी जिन्दगी भर कोशिश करते रहे कि मेरा कोई वाद नहीं है। सच बात तो यह है कि किसी भी विवेकशील आदमी का कोई वाद नहीं होता। विवेकशील आदमी प्रतिपल अपने विवेक से जीता है, वाद के आधार पर नहीं जीता। वाद के आधार पर वे जीते हैं, जिनके पास विवेक नहीं होता है। वाद का क्या मतलब होता है ? वाद का मतलब होता है तैयार उत्तर। जिन्दगी रोज बदलती है, जिन्दगी रोज नये सवाल पूछती है और वादों के पास तैयार उत्तर होते हैं। वह अपनी किताबों से उत्तर लेकर आ जाते हैं कि यह उत्तर काम करना चाहिए। जिन्दगी रोज बदल जाती है, वादी बदलता नहीं, वादी ठहर जाता है। जो महावीर पर ठहर गये हैं वे ढाई हजार वर्ष पहले ठहर गये हैं। ढाई हजार वर्ष में जिन्दगी कहाँ से कहां चली गयी और वादी महावीर पर ठहर गया है, वह कहता है, हम महावीर को मानते हैं। जो कृष्ण पर ठहरा है वह साढ़े तीन चार हजार वर्ष पहले ठहर गया है। जिन्दगी वहाँ नहीं ठहरी है, आगे बढ़ती चली गयी है। जिन्दगी प्रतिपल बदल जाती है, वह रोज नये सवाल लाती है और वादियों के पास बंधा हुआ रेडीमेड उत्तर है। रेडीमेड कपड़े हो सकते हैं रेडीमेड उत्तर नहीं हो सकते। वह बंधे हुए उत्तर को लेकर नये सवालों के सामने खड़ा हो जाता है। वह कहता है हमारा उत्तर सही है। तब ये उत्तर हारते चले जाते हैं इसलिए वादी व्यक्ति के पास निरंतर हार आती है, जीत कभी नहीं आती है। वादी हमेशा हार जाते हैं।

मैंने सुना है जापान में एक छोटा सा गांव था। उस गांवमें दो मंदिर हैं। एक मंदिर उत्तर का, मंदिर था, एक दक्षिण का मंदिर। उन दोनों मंदिर के कुत्ते में झगड़ा था, दुश्मनी थी। मंदिरों में हमेशा झगड़ा होता है यह तो आप जानते हैं। दो मंदिरों में दोस्ती नहीं सुनी होगी। मंदिर में कभी दोस्ती नहीं होती। अभी वे अच्छे दिन नहीं आये दुनिया में जब मंदिरों में दोस्ती होगी। अभी मंदिरों में झगड़ा

होता है। मंदिर खतरनाक हैं, अभी मंदिर धार्मिक नहीं हैं। जब तक मंदिर झगड़ा करवाते हैं तब तक वे धार्मिक कैसे हो सकते हैं। अभी दुनियां में सभी मंदिर अधर्म के अड्डे हैं क्योंकि वे झगड़े की शुरूआत हैं। उस गांव के दोनों मंदिरों में झगड़े थे। झगड़ा इतना ज्यादा था कि पुजारी एक दूसरे का चेहरा भी देखना पसन्द नहीं करते थे। दोनों पुजारियों के पास दो छोटे बच्चे थे काम करने के लिये, सब्जी लाने के लिए, ऊपर का काम सारा करने के लिये। पुजारियों ने उन बच्चों को समझा दिया था कि कभी भूलकर दूसरे मंदिर की तरफ मत जाना और यह भी समझा दिया था कि दूसरे मंदिर का वह जो

बच्चे थोड़े दिन तक नहीं बिगड़ते हैं इन्कार करते हैं। जिन बच्चों में जितनी जान होती है वे अपने मां बाप से उतने लड़ते हैं। अक्सर मां बाप जीत जाते हैं और बच्चे हार जाते हैं। अब तक तो ऐसा ही हुआ है बच्चे अब तक नहीं जीत सके। वह वक्त आयेगा जब मां बाप हारेंगे और बच्चे जीतेंगे क्योंकि जब तक बच्चे नहीं जीतते हैं मां बाप से, तब तक दुनिया के पुराने लोग समाप्त नहीं हो सकते, वे जारी रहेंगे क्योंकि मां बाप उस जहर को बच्चों में डाल देते हैं।

लड़का है उससे दोस्ती मत करना। हमारी दुश्मनी बहुत प्राचीन है और प्राचीन चीजें बड़ी पवित्र होती हैं तो एक पवित्र दुश्मनी में कभी बाधा मत देना। कभी मिलना जुलना मत। लेकिन बच्चे-बच्चे हैं। बूढ़े बिगाड़ने की कोशिश भी करते हैं तो भी एकदम तो नहीं बिगाड़ सकते। बच्चों को बिगाड़ने में बहुत समय लग जाता है। बूढ़े तो बिगाड़ने की कोशिश करते हैं कि जन्म से ही बिगाड़ दें लेकिन बिगाड़ते बिगाड़ते वक्त लग जाता है। बच्चे थोड़े दिन तक नहीं बिगड़ते हैं इन्कार करते हैं। जिन बच्चों में जितनी जान होती है वे अपने माँ बाप से उतने लड़ते हैं। अक्सर मां बाप जीत जाते हैं और बच्चे हार जाते हैं। अब तक तो ऐसा ही हुआ है बच्चे अब तक नहीं जीत सके। वह वक्त आयेगा जब मां बाप हारेंगे और बच्चे जीतेंगे क्योंकि जब तक बच्चे नहीं जीतते हैं मां बाप से, तब तक दुनिया के पुराने लोग समाप्त नहीं हो सकते, वे जारी रहेंगे क्योंकि मां बाप उस जहर को बच्चों में डाल देते हैं।

वह बूढ़ा पुजारी बच्चों को समझाता है कि कभी भूल कर देखना भी मत लेकिन बच्चे बच्चे हैं। कभी कभी मौका मिलते ही वे चोरी से छिपकर आपसमें आकरमिल लेते। चोरी से मिलना पड़ता था। दुनिया इतनी बुरी है कि यहां अच्छे काम भी चोरी से करने पड़ते हैं अभी अच्छे काम भी खुलेआम करने की नौबत नहीं आ पायी है। बच्चों को चोरी से मिलना पड़ता है। लेकिन एक दिन पुजारी ने देख लिया कि उसका बच्चा दूसरे बच्चे से मिल रहा है। पुजारी को आग लग गयी। हिन्दू बाप को आग लग जाती है लेकिन जब हम देखें कि उसका बेटा मिलता हो और बेटा से बेटा मिल रहा हो तो तब आग कम लगती है, अगर बेटी से बेटा मिल रहा हो तो आग बहुत लग जाती है क्योंकि दो बेटों का मिलना उतना खतरनाक नहीं है लेकिन एक बेटे और बेटी का मिलना बहुत खतरनाक हो सकता है। वह खतरनाक इतना हो सकता है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों उस खतरे में बह जायें इसलिये बेटी और बेटे को मिलने की बिल्कुल ही रुकावट है। पुजारी ने देखा, वह तो क्रोध से भर गया और उस लड़के को बुलाया और उससे कहा, तू क्या बात कर रहा था। मैंने कितनी बार कहा कि उससे बात नहीं करनी है। उस लड़के ने कहा, अब तो मुझे भी लगा कि आप ठीक कहते हैं कि उससे बात नहीं करनी थी क्योंकि आज मैं पराजित होकर लौटा हूं। मैंने उस लड़के से पूछा कि कहां जा रहे हो? उस लड़के ने कहा, जहाँ हवाएं ले जायें और मैं हैरान रह गया। उसने इतनी दार्शनिक बात कह दी कि जहाँ हवायें ले जायें। फिर मुझे तो कुछ

सूझा ही नहीं कि आगे मैं क्या कहूं। उस पुजारी ने कहा, यह बहुत खतरनाक बात है। हम कभी उस मंदिर के किसी आदमी से नहीं हारे। यह हार पहली है, कल तुम जाकर उससे पूछो फिर कि कहाँ जा रहे हो और जब वह कहे जहाँ हवाएं ले जायें, तो उससे कहना कि अगर हवाएं रुकी हों और ठहर गयी हों तो कहीं जाओगे कि नहीं। फिर वह भी घबरा जायगा। वह लड़का उत्तर तैयार लेकर जाकर रास्ते पर खड़ा हो गया। तैयार उत्तर, उत्तर तैयार बुद्धिहीनता का लक्षण है। जिस आदमी के पास उत्तर तैयार है, उससे जड़ बुद्धि का आदमी खोजना मुश्किल है। उत्तर तैयार होना ही मिडयाकर माइंड का लक्षण है। बुद्धिमान आदमी के पास उत्तर कभी तैयार नहीं होते। वह प्रश्नों का साक्षात्कार करता है। उत्तर तैयार नहीं होता। लड़के ने उत्तर तैयार कर लिया। और वह जाकर रास्ते पर खड़ा हो गया और वह तैयार अपना उत्तर रखे है कि जब वह आये और मैं पूछूं। पंडित इसी तरह के होते हैं। सब उत्तर तैयार है। वह लड़का आया रास्ते पर। तैयार उत्तर वाले लड़के ने पूछा कि मित्र कहाँ जा रहे हो। पूछने में उसे उत्सुकता नहीं थी, उसे उत्सुकता थी अपने उत्तर देने में। बहुत कम लोगों की उत्सुकता पूछने में होती है। बहुत अधिक लोग ऐसे हैं जिनको अपने उत्तर में उत्सुकता होती है और जिन लोगों को उत्तर में उत्सुकता होती है उनका पूछना सदा झूठा होता है। उस लड़के ने कहा, कहाँ जा रहे हो ? "जहाँ पैर लिये जायें।" अब बड़ी मुश्किल हो गयी क्योंकि उत्तर तैयार था। अब क्या करे, क्या न करे। वही उत्तर देना व्यर्थ हो गया। क्रोध आया बहुत, पर अपने ऊपर नहीं, उस लड़के पर कि बेईमान है। अपनी बात बदलता है। कल कहता था कि हवा जहाँ ले जायें, आज कहता है कि पैर जहाँ ले जायें। बेईमान। लौटकर अपने गुरू से कहा कि वह लड़का तो बहुत बेईमान निकला। उस गुरू ने कहा, उस मंदिर के लोग सदा से बेईमान रहे हैं। नहीं तो झगड़ा हमारा क्या है। तो वह उत्तर बदल गया।

जो बुद्धिहीन हैं उन्हें कभी ख्याल ही नहीं आता कि जिन्दगी रोज बदल जाती है। जिन्दगी बड़ी बेईमान है। सिर्फ मुर्दे नहीं बदलते, जिन्दगी बदल जाती है, फूल बदल जाते हैं, पत्थर उनके नीचे वैसे ही पड़े रहते हैं, वे बिल्कुल नहीं बदलते। पत्थर मन में सोचते हैं कि बड़े बेइमान हैं ये फूल। इधर खिलते हैं, गिरने लगते हैं, क्या बेईमानी है, क्या बदलाहट है, सुबह कुछ, दोपहर कुछ, सांझ कुछ हो जाते हैं। हम पत्थरों को देखो जैसे सुबह थे वैसे अब हैं। वैदिक युग से लेकर अब तक पत्थर ही हैं। ये फूलों का कोई भरोसा नहीं, इन फूलों का कोई ठिकाना नहीं, इन फूलों के पास कोई आत्मा नहीं है, बस बदल जाते हैं। उस बच्चे ने कहा, वह तो बदल गया, अब मैं क्या करूँ। उसके गुरु ने कहा, तुमको हराना जरूरी है, मैं झट से उत्तर बताता हूं, तैयार करके जाना जरूरी है और उसे हराना जरूरी है। लेकिन उसे ख्याल नहीं आया कि तैयार उत्तर हार गया था। गुरु को ख्याल

बहुत कम लोगों की उत्सुकता पूछने में होती है। बहुत अधिक लोग ऐसे हैं जिनको अपने उत्तर में उत्सुकता होती है और जिन लोगों को उत्तर में उत्सुकता होती है उनका पूछना सदा झूठा होता है।

आया कि वह उत्तर हार गया था लेकिन गुरू ने समझा कि वह खास उत्तर हार गया है। नासमझ यही समझते रहते हैं कि वह खास उत्तर हार गये हैं, तो उनका उत्तर काम आ जाएगा। लेकिन उन्हें पता नहीं कि तैयार उत्तर हमेशा हार जाते हैं। तैयार उत्तर हारा था। कोई उत्तर नहीं हारता। दूसरे दिन उससे कहा कि जब वह कहा कि जहाँ पैर ले जायें तो उससे कहना कि भगवान न करे कि पैर से लंगड़े हो जाओ। अगर पैर से लंगड़े हो जाओगे। तो कहो जाओगे कि नहीं। वह लड़का खुश हुआ। फिर जाकर उसी रास्ते पर खड़ा हो गया, प्रतीक्षा कर रहा है। लड़का मंदिर से निकला। उसने उससे पूछा कि मित्र कहाँ जा रहे हो ? उस लड़के ने कहा, साग सब्जी लेने मैं बाजार जाता हूं।

यह हमारा देश तैयार उत्तरों से पीड़ित है। यहां सब उत्तर तैयार हैं और कोई आदमी जिन्दगी के किसी सवाल को सीधा एनकाउंटर, सीधा साक्षात् करने के लिए तैयार नहीं है। वे चाहे उत्तर बुद्ध ने दिये हों चाहे महावीर ने, चाहे कृष्ण ने, चाहे अभी गांधी ने, वे उत्तर सब हमारे पास तैयार हैं और उन उत्तरों को पकड़ कर हम बैठे हैं। इस देश की आत्मा इसीलिए अविकसित रह गयी। इस देश की आत्मा इतनी पत्थर हो गयी है तो उसने फूल होने को बन्द कर दिये हैं, उसने परिवर्तन होने की क्षमता खो दी है, वह ठहर गयी है, अटक गयी है, स्टेटिक हो गयी है। और अगर कोई कहे कि छोड़ दो तैयार उत्तरों को तो हम कहेंगे कि हमारे महात्माओं को छीनते हो, हमारे गुरुओं को छीनते हो हमारे तीर्थंकरों को छीनते हो? बड़े दुश्मन हो हमारे। कोई आपसे तीर्थंकर नहीं

यह हमारा देश उत्तरों से पीड़ित है। यहां सब उत्तर तैयार हैं और कोई आदमी जिन्दगी के किसी सवाल को सीधा एनकाउन्टर, सीधा साक्षात् करने के लिए तैयार नहीं है : वे चाहे उत्तर बुद्ध ने दिये हो चाहे कृष्ण ने, चाहे अभी गांधी ने, वे उत्तर सब हमारे पास तैयार हैं और उन उत्तरों को पकड़कर हम बैठे हैं। इस देश की आत्मा इसीलिए अविकसित रह गयी।

छीन रहा है, कोई महात्मा नहीं छीन रहा है लेकिन आप इतने जोर से पकड़े हो कि आपको लगता है कि कोई छिन न जाय। पकड़ने की वजह ये डर पैदा होता है कि कहीं छिन न जाय। पकड़ना छोड़ दो कोई तीर्थंकर नहीं छिनेगा, कोई महात्मा नहीं छिनेगा। वह अपनी हैसियत से कुछ हैं, आपके पकड़ने से कुछ नहीं हैं लेकिन हम जोर से पकड़े हुए हैं हम उनको सहारा समझे हुए हैं।

गाँधी ने उत्तर दिये थे और गांधी एक अद्भुत आदमी थे। मैं मानता हूं कि गांधी में हिम्मत थी क्योंकि उनके पास तैयार उत्तर नहीं थे। हिन्दुस्तान में पिछले दो हजार वर्षों में अगर किसी आदमी ने जीवन को गति दी तो वह आदमी गांधी था और गति देने का एकमात्र कारण कि उस आदमी के पास तैयार उत्तर नहीं थे। हिन्दुस्तान के दूसरे सारे नेताओं के पास तैयार उत्तर हैं, गांधी के पास तैयार उत्तर नहीं था इसलिए गांधी हिन्दुस्तान की जिन्दगी में बड़े बेमौजी थे। हिन्दुस्तान के सभी नेता गांधी से परेशान रहे। हिन्दुस्तान के बड़े नेताओं ने गाँधी के पीछे छिपकर हंसी और मजाक भी की कि यह आदमी गड़बड़ है क्योंकि यह आदमी कब क्या कहेगा कब क्या करेगा इसका कोई भरोसा नहीं। यह आदमी बदल जाता है। यह आदमी सुबह कुछ कहता है सांझ कुछ कहता है। उस वक्त कुछ कहता है इस वक्त कुछ कहता है। यह आदमी भरोसे के योग्य नहीं है। लेकिन गांधी अकेले ने इस मुल्क को इतनी गति दी जितनी इस मुल्क के हजारों लाखों महात्मा मिलकर नहीं दे सकते थे। कैसे दी इस आदमी ने गति? इस आदमी के गति देने का बुनियादी सूत्र था, इस आदमी के पास तैयार उत्तर नहीं थे, इस आदमी ने जिन्दगी को जीने की कोशिश किया, जिन्दगी भर सामना करने की कोशिश की, जिन्दगी से जूझ कर जो उत्तर आया है वह गांधी ने दिया लेकिन वह उत्तर भी इसने कभी नहीं माना कि यह अल्टीमेट है, चरम है। इतना ही कहा, अभी यह सूझता है, कल दूसरा सूझ सकता है, परसों तीसरा भी सूझ सकता है। हिन्दुस्तान के किसी महात्मा ने कभी इस तरह की भाषा नहीं बोली थी, हिन्दुस्तान के महात्मा हमेशा चरम भाषा बोलते हैं। वे कहते हैं कि यह आखिरी उत्तर है, यह सर्वज्ञ की वाणी है, वशिष्ठ के आगे अब कुछ भी नहीं है, यह अंतिम हो गया है। गांधी ने बड़ी हिम्मत की और कहा कि सर्वज्ञ की वाणी नहीं है एक खोजी की वाणी है, एक खोजने वाले की। इसलिए अपनी किताब का नाम दिया "सत्य के प्रयोग" सत्य की उपलब्धि नहीं एक्सपैरिमैंटिंग ट्रुथ। भूल चूक की सम्भावना है प्रयोग में। भूल चूक की सम्भावना को स्वीकार कर इस आदमी ने एक अद्भुत काम किया। हम इस आदमी के पीछे फिर पड़ गये हैं कि

इसने जो अद्भुत काम किया था उसको खत्म कर दें, उसकी हत्या कर दें। हम कहते हैं, हम गांधी का वाद बनायेंगे कि हम तैयार उत्तर रखेंगे। गाँधी ने जो उत्तर दिया था वह उत्तर हम आगे भी लायेंगे। बस गांधी की हत्या शुरू हो गयी। गांधी का वाद, यानी गांधी की हत्या। जिस आदमी का वाद बनायेंगे उसकी हत्या हो जायेगी और लोग मुझसे कहते हैं कि मैं गांधी का दुश्मन हूं। गांधी का दुश्मन कौन है? जितने लोग गांधी का लेबल लगाकर खड़े हैं वे सब गांधी के दुश्मन हैं। गांधी को लेबल की बिल्कुल जरूरत नहीं है। गांधी की जिन्दगी को पलटने की जरूरत है। और अगर समझेंगे तो पहला सूत्र यह समझ में आयेगा कि गांधी के पास तैयार उत्तर नहीं है हमारे पास भी तैयार उत्तर नहीं होने चाहिए। हम भी इस जिन्दगी को समझें, देखें, और पहचानें। हिन्दुस्तान के सारे जगत में पिछड़ जाने के बुनियादी कारण में से एक कारण यह है। दुनिया में किसी काम ने अपने उत्तर तैयार नहीं रखे हैं उन्होंने उत्तर छोड़ने शुरू कर दिये हैं नये उत्तर की खोज में। और हम? हमें जब भी जिन्दगी में सवाल उठेंगे हम भागेंगे फौरन कृष्ण के पास, भागेंगे फौरन महावीर के पास कि क्या है उत्तर। हमारी अपनी कोई आत्मा नहीं है, हमारे पास अपना कोई विकास का चित्त नहीं है, हमारे देश के पास अपनी कोई क्षमता नहीं है कि हम जिन्दगी को समझें और जबाव दें। नहीं, लेकिन इसमें डर रहता है। भूल हो सकती है, पुराने उत्तर में हमेशा भूल नहीं होती। लेकिन ध्यान रखें, जो कौम भूल करने की क्षमता खो देती है वह कौम मर जाती है। भूल करने की क्षमता जीवन का लक्षण है इसलिए मैं कहता हूं कि रोज भूल करना। भूल करने से मत डरना। हाँ एक ही भूल दोबारा मत करना क्योंकि बंधी हुई भूल बंधा हुआ उत्तर हो जाता है। जिन्दगी एक एडवेंचर है, एक खोज है, एक साहस की खोज है, एक अभियान है जहाँ बहुत भूलें होंगी। भूलों से हम सीखेंगे और आगे बढ़ेंगे। अगर हमने भूलें नहीं कीं तो फिर जिन्दगी में और आगे नहीं बढ़ेंगे और इसलिए हम सुरक्षा चाहते हैं। लोग किसी को पकड़ लेते हैं और कहते हैं कि हमारे उत्तर सदा के लिए हों गये। अब हम दोबारा नये उत्तर न खोजेंगे। नये उत्तर में खतरा रहता है और असुरक्षा रहती है। भूलें हो सकती हैं। महात्मा का दिया हुआ उत्तर है इसको जोर से पकड़ लो। महात्माओं के दिए हुए ताबीज हम पकड़ते थे, वह उतना खतरनाक नहीं था क्योंकि महात्माओं की ताबीज बिल्कुल बेकार हैं। खतरा नहीं है। उन महात्माओं के दिए उत्तर अगर मुल्क ने पकड़े तो मुल्क का विकास अवरुद्ध हो जायगा। मामला आगे नहीं जा सकता है।

ध्यान रखें, जो कौम भूल करने की क्षमता खो देती है वह कौम मर जाती है। भूल करने की क्षमता जीवन का लक्षण है इसलिए मैं कहता हूं कि रोज भूल करना भूल करने से मत डरना। हां एक ही भूल दोबारा मत करना क्योंकि बंधी हुई भूल बंधा हुआ उत्तर हो जाता है। जिन्दगी एक एडवेंचर है, एक खोज है, एक साहस की खोज है, एक अभियान है।

मैं गांधी का दुश्मन नहीं हूं। गांधी से जैसा मेरा प्रेम है। बहुत कम लोगों का होगा लेकिन प्रेम को प्रगट करने का हम एक ही रास्ता जानते हैं कि किसी आदमी की पत्थर की मूर्ति बनाकर उसपर फूल चढ़वाओ। प्रेम का हम एक ही रास्ता जानते हैं कि पूजा करो, प्रेम का हम एक ही रास्ता जानते हैं कि किसी आदमी को भगवान बना दो। मैं आपको कहता हूं कि यह प्रेम का रास्ता नहीं हैं, यह उस आदमी से बचने की तरकीब है। जिस आदमी से बचना हो उसको भगवान बना दो। भगवान होते ही वह हमारी झंझट के बाहर हो गया। हम आदमी रह गये वह भगवान हो गया, बात खत्म हो गयी। हमने पहले भी अच्छे आदमी से इसी तरह से छुटकारा पाया था। कृष्ण को भगवान बना लिया मामला खत्म

हो गया, महावीर को तीर्थंकर बना दिया मामला खत्म हो गया। फिर महावीर जो करते हैं, हम कह सकते हैं कि वे तीर्थंकर हैं इसलिए करते थे, हम साधारण आदमी हैं फिर क्या कर सकते हैं। हम सिर्फ पूजा कर सकते हैं। कृष्ण भगवान के अवतार हैं, राम भगवान के अवतार हैं। वे कुछ भी कर सकते हैं, लीला कर सकते हैं। हम ? हम साधारण आदमी हैं, हम क्या कर सकते हैं। राम से बचने की तरकीब देखी आपने ? कृष्ण से बचने की तरकीब देखी ? बड़ा कनिंग, बड़ी चालाकी से भरा हुआ रास्ता खोजा है हमने और चालाकी यह है कि आदमी को भगवान बना दो, अपनी सीमा के बाहर खदेड़ दो। उस आदमी को हमने आदमियत के बाहर कर दिया और आदमियत के जो बाहर हो गया उससे फिर.....

फिर पूजा कर लेते हैं, वर्ष में कभी एक दिन त्योहार मना लेते हैं, शोर गुल मचा देते हैं, बात खत्म हो जाती है। उस आदमी से कोई प्रयोजन नहीं रहा।

मैं आपसे कहना चाहता हूं कि गाँधी को भगवान नहीं बनने देना है। बड़ी कोशिश करनी है कि गाँधी भगवान न बन जायें ताकि गाँधी इस देश के काम में आ सकें। गाँधी को आदमी ही रहने देना है लेकिन गाँधी के पीछे चलने वाले लोग बड़ी कोशिश में लगे हैं भगवान बनाने की। भगवान बनाने से हमारा उनसे छुटकारा हो जायगा। पूजा करना किसी आदमी की, बस यह मान लेना है कि यह आदमी नहीं था और हम आदमी थे। हम आदमी हैं और यह आदमी नहीं। बस बात खत्म हो गई। हिन्दुस्तान ने अपने सर्वश्रेष्ठ पुरुषों को भगवान बनाकर बिठाल दिया। इसलिये हिन्दुस्तान का आदमी श्रेष्ठ पुरुष नहीं हो सका। हिन्दुस्तान में आदमी को देखते हैं, जहाँ इतने बड़े लोग हैं वहाँ का आदमी इतना छोटा और दीन हीन क्यों है। कभी कोई विचार किया आपने ? जहाँ महावीर होते हों, जहाँ बुद्ध चरण रखते हों, जहाँ गाँधी जैसे अदभुत आदमी के फूल खिलते हों जहाँ हजारों अद्‌भुत लोग पैदा हुए हों वहाँ की मनुष्यता की क्या हालत है। वहाँ का मनुष्य कैसा दीन हीन और जमीन पर रेंगता हुआ है। हमको शर्म भी नहीं आती जब हम कहते हैं कि हम बुद्ध, महावीर और कृष्ण और राम के देश के लोग हैं हम देख कर शक होता है कि न कभी राम हुए होंगे, न कभी बुद्ध हुए होंगे, न कभी कृष्ण हुए होंगे। हमें देख कर कोई सबूत नहीं होता है उनके होने का। हमें देखकर ऐसा लगता है कि यह सब कहानियाँ हैं, मनगढंत हैं। हमें देखकर सबूत मिलता है ? हमें देखकर सबूत मिलता है कि महावीर पैदा हुए होंगे हमारे बीच ? नहीं साहब, महावीर की वजह से आप बड़े नहीं हो सकते। आपकी वजह से महावीर छोटे हो सकते हैं क्योंकि आप बड़े हैं महावीर बिल्कुल छोटे हैं।

लेकिन यह दुर्भाग्य कैसे हुआ ? यह दुर्भाग्य ऐसे हुआ कि जिन लोगों के कारण मनुष्यता ऊपर उठ सकती थी उनको हमने मनुष्यता के बाहर कर दिया। और जब हम अपनी मनुष्यता के घेरे में छोटे रहने में सुखी हो गये, हम छोटे रहने में तृप्त हो गये, छोटे रहना हमारी नियति हो गयी। कुछ लोगों का बड़ा होना नियति है, हमारा छोटा होना नियति है। हिन्दुस्तान को अपने सब भगवानों को नीचे उतार कर मनुष्य की भूमि पर खड़े करना पड़ेगा। महावीर को उतार लाना पड़ेगा ताकि महावीर हमारे बीच खड़े हो जायें। इससे महावीर छोटे नहीं होंगे, इससे हमारे बड़े होने की संभावना बढ़ती है। यह दुर्भाग्य, यह बहुत ही अभागी स्थिति है कि जहाँ इतने अद्‌भुत लोग हों वहाँ की आदमियत इतनी छोटी हो। क्या कारण है और कभी-कभी मैं सोचता हूं कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि इतने बड़े लोग इसलिये दिखायी पड़ते है कि हम बहुत छोटे हैं। जैसे स्कूल में एक काले तख्ते पर, ब्लैक बोर्ड पर सफेद खड़िया से शिक्षक उस पर लिखता है, सफेद दीवाल पर नहीं लिखता है। सफेद दीवाल पर लिखेंगे तो लिख तो जायेगा लेकिन दिखायी नहीं देगा। दिखायी पड़ेगा काले ब्लैक बोर्ड पर सफेद खड़िया का लिखा हुआ। कहीं ऐसा तो नहीं है कि यह महात्मा इतने बड़े महात्मा दिखाई पड़ते हैं हमारी ब्लैक

बोर्ड में। यह दीन हीन लोगों का इतना बड़ा समूह है इसलिए एक आदमी बड़ा होकर दिखायी पड़ने लगता है। जैसे वह सफेद और हमारा ब्लैक बोर्ड, इसलिये बहुत बड़ा हो जाता है। दुनिया में किसी देश में इतने महापुरुष पैदा नहीं हुए जितने हमारे देश में पैदा होते हैं। इसमें कोई शक की बात है। इसमें पहली शक की बात यह है कि हमारी मनुष्यता बहुत नीचे है। इसलिए एक आदमी जरा भी ऊपर उठता है तो बहुत बड़ा दिखाई पड़ना शुरू हो जाता है और हमारी मनुष्यता इतनी नीची है कि हम उस आदमी का युग युग गान करने लगते हैं क्योंकि उस गुणगान में भी हम अपने अहंकार को उपलब्ध करने की कोशिश करते हैं।

गाँधी जी एक गोलमेज काँग्रेस में इंगलैंड गये थे। गाँधीजी का सेक्रेटरी बर्नाड शा से मिलने गया। बर्नाड शा से उन्होंने पूछा, शिष्य हमेशा ही ऐसे सवाल पूछते हैं। शिष्य पूछते हैं कि हमारे महात्मा के बाबद् क्या ख्याल है। महात्माओं की फिक्र नहीं होती है सिर्फ इस बात की कि हमारा महात्मा बड़ा है। हम बड़े महात्मा के बड़े शिष्य हैं। मजा बहुत दूसरा होता है। सेक्रेटरी ने बर्नाड शा से पूछा कि महात्मा गाँधी के बारे में आपका क्या ख्याल है, आप उनको महात्मा मानते हैं? बर्नाड शा बहुत अद्भुत आदमी था। उसने कहा, महात्मा? महात्मा मानता हूं लेकिन नम्बर दो। नम्बर एक तो मैं ही हूं। सेक्रेटरी बहुत हैरान हुए होंगे कि यह कैसा आदमी है। यह कहता है कि नम्बर एक का मैं हूं और नम्बर दो का गाँधी है।

फ्रांस की राजधानी पेरिस में युनिवर्सिटी का एक प्रोफेसर, दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर ने क्लास में अपने विद्यार्थियों से कहा कि मैं दुनिया का सबसे महान व्यक्ति हूं। बच्चों ने सोचा, बेचारा यह एक गरीब प्रोफेसर है, यह दुनिया का सबसे बड़ा आदमी कैसे पैदा हो गया। लड़के कहते हैं, दिमाग गड़बड़ हो गया होगा। राजनीतिज्ञ अगर दुनिया को कहते फिरते हैं कि हमसे बड़ा कोई नहीं है तो कोई नहीं फिक्र करता है। क्योंकि उनके तो दिमाग खराब होते हैं लेकिन एक दर्शन का प्रोफेसर कहे तो लड़कों ने कहा, आप कह रहे हैं? दुनिया के सबसे बड़े आदमी? उसने कहा मैं जो कहता हूं मैं सिद्ध कर सकता हूं। मैं बिना सिद्ध किये कोई बात कहता ही नहीं। विद्यार्थियों ने कहा—तो आप कृपा करें और सिद्ध कर दें। लड़कों को बहुत कठिनाई थी कि वह कैसे सिद्ध करेगा लेकिन यह पता नहीं, उस प्रोफेसर ने बड़ा व्यंग किया, बड़ा मजाक किया। दुनिया में कुछ अच्छे लोग बड़ा व्यंग कर जाते हैं। लेकिन हमें पता नहीं चलता।

वह प्रोफेसर उस बोर्ड पर गया जहाँ दुनिया का नक्शा टंगा था। उसने पूछा, इस बड़ी दुनिया में सबसे श्रेष्ठ मुल्क कौन सा है? सभी फ्रांस के रहने वाले थे। उन्होंने कहा—फ्रांस। स्वाभाविक है, फ्रांस में रहने वाला यही समझता है कि फ्रांस सबसे बड़ा देश है क्योंकि फ्रांस में रहने वाला यह कैसे मान सकता है कि जहाँ वह रहता है वह देश बड़ा न हो। जहाँ वह रहता है वह देश तो बड़ा होना चाहिए। तो उस प्रोफेसर ने कहा, बाकी दुनिया की बात खत्म हो गयी। अब मैं यह सिद्ध कर दूँ कि फ्रांस में सब से बड़ा हूं तो दुनिया में सबसे बड़ा हो जाऊंगा। सब विद्यार्थी नहीं समझ पाये कि वह कहाँ ले जा रहा है। उसने पूछा—फ्रांस का सबसे बड़ा नगर कौन सा है? तब विद्यार्थियों को शक हुआ, वे सभी पेरिस के रहने वाले थे। उन्होंने कहा—पेरिस। तब बड़ा शक हुआ कि मामला गड़बड़ हुआ जा रहा है। उस प्रोफेसर ने कहा—पेरिस में सबसे बड़ा स्थान कौन सा है? युनिवर्सिटी, विश्वविद्यालय। उसने कहा युनिवर्सिटी ही रह गयी है। युनिवर्सिटी में सबसे श्रेष्ठ सबजेक्ट, सबसे श्रेष्ठ विषय कौन सा है? फिलोसिफी, दर्शन शास्त्र। और उसने कहा और मैं दर्शन शास्त्र का हेड आफ दी डिपार्टमेंट हूं। मैं इस दुनिया का सबसे बड़ा आदमी हूं।

आदमी का अहंकार कैसे कैसे रास्ते खोजता है। जब आप कहते हैं, हिन्दू धर्म सबसे बड़ा है तो भूलकर यह मत सोचना कि हिन्दू धर्म से आपको कोई मतलब

है, आपको मतलब खुद से है। आप हिन्दू हैं और हिन्दू धर्म को महान कहकर अपने को महान कहने की तरकीब कर रहे हैं। और जब आप कहते हैं कि हमारा भगवान् सबसे बड़ा है, हमारा महात्मा सबसे बड़ा है तो आपको न भगवान से कोई मतलब है, न महात्मा से कोई मतलब है। आप कहते हैं कि मेरा महात्मा, मैं इतना बड़ा आदमी हूं कि मेरा महात्मा छोटा कैसे हो सकता है लेकिन दुनिया में झगड़ा हिन्दू मुसलमान का, ईसाई का, जैन का, बौद्ध का, सिख का है। यह झगड़ा महात्माओं का झगड़ा नहीं है यह उन महात्माओं के बड़े होने वाले लोगों के अहंकार का झगड़ा है। इसलिए जब अगर मैं कहूं कि महात्मा गांधी को नीचे लाना है, नहीं ले जाना है स्वर्ग पर, वे पृथ्वी पर बड़े काम के हैं, उनकी जड़ें पृथ्वी पर रखनी हैं, नहीं ले जाना है स्वर्ग पर। मैं गाँधी का दुश्मन नहीं हूं। मैं कहता हूं, गाँधी इस पृथ्वी के काम के बनें, मैं चाहता हूं कि गाँधी पर हम सोचें, गाँधी से हम सीखें और गाँधी से अगर कोई बड़ी से बड़ी बात सीखी जा सकती है तो वह यह कि जिन्दगी रोज नये उत्तर मांगती है, जिन्दगी रोज नयी चेतना मांगती है, जिन्दगी बंधी हुई धाराओं में नहीं रुकना चाहती है और जो कौम रुक जाती है उसकी जिन्दगी पिछड़ जाती है और मर जाती है।

भारत एक मरा हुआ देश है। हमारा जो अस्तित्व है वह पोस्थुमस है, मरने के बाद का है। हम हजारों साल से मुर्दों की तरह जी रहे हैं। हमने जिन्दगी की धारा खो दी है। रूस के बच्चों से पूछो कि क्या कर रहे हैं? बच्चे सोच रहे हैं कि चांद पर कैसे बस्ती बसायें। अमरीका के बच्चों से पूछो, वे सोच रहे हैं कि अंतरिक्ष में कैसे उतरेंगे, बसेंगे। और हमारे बच्चे? हमारे बच्चे रामलीला देख रहे हैं। भगवान बहुत प्यारे हैं लेकिन रामलीला देख कर वह कौम रुक जाती है। अभी और रामलीलायें होंगी, अभी भविष्य में और राम पैदा होंगे पुराने रामों से बहुत नये। भगवान थक नहीं गये हैं। भगवान और राम पैदा करेंगे और भगवान कभी भी पुराने को दबाना नहीं "हमेशा श्रेष्ठतर को पैदा करता चला जाना है। अभी और रामलीलायें होंगी अंतरिक्ष में न मालूम किन तारों पर, न मालूम किन ग्रहों पर लेकिन वह रामलीलायें अमरीका और रूस के बच्चे देखेंगे। हमारे मुल्क के बच्चों के भाग्य में नहीं हो सकता है। हमारा मुल्क तो तृप्त है, अतीत की रामलीला को देखकर ही काम चलाते हैं। मैं चाहता हूं यह अतीतोन्मुखी देश भविष्योन्मुखी हो जाय। मैं चाहता हूं यह आंखें जो पीछे की तरफ जकड़ कर रह गयी हैं आगे की तरफ देखने लगें। भगवान ने बड़ी गलती की कि हमारी आँखें आगे की तरफ लगायीं, अगर वह खोपड़ी पर पीछे लगा देता तो हम बड़े खुश होते क्योंकि आगे हमने देखा नहीं, हम तो पीछे की, रास्ते की उड़ती धूल को देखते हैं, उन भस्मों को जो निकल गयीं, उन कथाओं को जो हो चुकी, वह सब जो हो चुका वही हमारी आंखें हैं।

जो होने को है वह हमारी आँखों में नहीं है। कब तक हम पीछे को पकड़कर देखेंगे? गांधी हो चुके, अब उनको पकड़ कर रोकने का मतलब? अब वही रामलीला शुरू करनी है। नहीं, हम और गांधी पैदा करेंगे, हम और राम पैदा करेंगे, हम और महावीर पैदा करेंगे क्योंकि हमारी आत्मा चुक नहीं गई, हमारे पास अभी पैदा करने की क्षमता बहुत है। हम पीछे नहीं रुकेंगे, हम आगे बढ़ेंगे। जब मैं यह कहता हूं तो लोग समझते हैं कि शायद मैं उनका दुश्मन हूं। मैं उनका दुश्मन नहीं हूं। आप हैं उनके दुश्मन जो उनको पकड़ लेते हैं क्योंकि उनको पकड़ने की वजह से जो लोग पैदा हो सकते थे वे पैदा नहीं हो पाते। भविष्य की तरफ चाहिए दृष्टि। इन आने वाले तीन दिनों में यह भविष्योन्मुख मार्ग कैसे निर्मित होगा, इस समाज के निर्माण के क्या सूत्र होंगे। समाज की क्रांति के क्या आधार होंगे, उस संबंध में मैं बातें करूंगा। अभी तो मैंने प्राथमिक बातें कही और प्राथमिक बातें ही गड़बड़ हो गयीं, समझने में तो फिर बड़ी मुश्किल है। और भी मैं बातें कहूंगा इसलिए मैं प्रार्थना करूँगा कि समझने की सिर्फ कोशिश करें, मानने की कोई जरूरत नहीं है। न मैं कोई गुरू हूं, न मैं कोई नेता हूं और न मुझे नेता होने का पागलपन है। मैं तो मानता ही यही हूं कि सिर्फ वे ही लोग नेता होना

चाहते हैं जो किसी तरह की हीनता की ग्रंथि से पीड़ित होते हैं। और नेता होना इस मुल्क में इतना सरल है कि कोई भी आदमी अब नेता नहीं होना चाहेगा। एक छोटी सी कहानी और अपनी बात पूरी करूँगा।

मैंने सुना है एक गधे ने अखबार पढ़ना सीख लिया था। सुनकर बड़ी हैरानी हुई कि गधे ने अखबार पढ़ना कैसे सीख लिया। लेकिन फिर मुझे पता चला कि गधे और कुछ कर ही नहीं सकते सिवाय अखबार पढ़ने के। वह गधा अखबार पढ़ने लगा तो ज्ञानी हो गया। बहुत से गधे अखबार पढ़ते ही ज्ञानी हो जाते हैं। जब वह अखबार पढ़ने लगा तो वह भाषण करना भी सीख गया क्योंकि अखबार जो पढ़ लेता है वह भाषण भी दे सकता है क्योंकि भाषण में कुछ करना नहीं होता। अखबार जो आपके दिमाग में डाल दे वह मुंह से निकाल देना पड़ता है और फिर गधे के पास बहुत से शब्द हैं। शास्त्रीय कला है। वह भाषण देने लगा। उसने सोचा कि छोटे मोटे गाँव में क्या रहना। दिल्ली की तरफ चलना चाहिए क्योंकि गधों को जैसे ही बोलना आ जाये, अखबार पढ़ना आ जाये, वे एकदम दिल्ली की तरफ जाने शुरू हो जाते हैं। वह गधा एक दिन दिल्ली पहुंचा। गधे को दिल्ली पहुंचने से रोकना भी बहुत मुश्किल है। उस गधे ने दस पन्द्रह और गधे इकट्ठा कर लिये थे और जिसके पास गुण है वह नेता है। वह दिल्ली पहुंच गया। यह पुरानी बात है, तब पंडित नेहरू जिन्दा थे। वह पं० नेहरू के मकान पर पहुंच गया। संतरी लगा हुआ था द्वार पर वह लोगों को रोक लेता है लेकिन गधे को रोके कौन। उसने गधे की कोई फिक्र न की। संतरी गधों की फिक्र नहीं कर रहे हैं और गधे महल में घुस जाते हैं। वह गधा अंदर घुस गया। पं० नेहरू किसी बगिया में टहलते थे, उस गधे ने पीछे से जाकर कहा, पंडित जी। पंडित जी बहुत घबराये क्योंकि न वे भूत प्रेत मानते थे, न भगवान मानते थे। कहा, क्या मामला है? यह आवाज कहाँ से आती है? क्योंकि भूत प्रेत मैं मानता ही नहीं। कौन बोल रहा है? वह गधा डर गया। उसने कहा, मैं बहुत डर रहा हूं, शायद आप नाराज न हो जायें। मैं एक बोलता हुआ गधा हूं। आप नाराज तो नहीं हो गये? पंडित नेहरू ने कहा, मैं रोज बोलते हुए गधों को इतना देखता हूं कि नाराज होने का कोई कारण नहीं। किसलिये आये हो? तो उस गधे ने कहा, मैं बहुत डरता था कि आप मुझसे मिलेंगे या नहीं, आपकी बड़ी कृपा, आप मिलने का वक्त दे सकते हैं? मैं एक गधा हूं। पंडित नेहरू ने कहा, यहाँ गधों के अतिरिक्त मिलने कोई आता ही कौन हैं। "क्या प्रयोजन है?" उस गधे ने कहा, मैं नेता बनना चाहता हूं। पंडित नेहरू ने कहा, फिर तो यह ठीक है। गधा होना यह लक्षण है कि आदमी नेता बनना चाहता है। यह सारा का सारा देश नेता बनने की कोशिश में है। इस देश को नेताओं की जरूरत नहीं है। इस देश को अनुयायियों को भी जरूरत नहीं है। इस देश में उन लोगों की जरूरत है जो इस देश के सोये हुए विचार को जगायें इस देश में उस विचार की क्रांति की जरूरत है। इस मुल्क को राजनीति की नहीं एक आत्मिक क्रांति की जरूरत है। मेरी उत्सुकता राजनीति में नहीं। न मेरी उत्सुकता नेता में है। मेरी उत्सुकता इस देश की सोई हुई आत्मा में है और उस आत्मा को जितनी भी चोट दे सकूँ, देना जारी रखूँगा। आप गाली दें, नाराज हों, यह सब मैं स्वीकार करूँगा लेकिन मेरी कोशिश जारी रहेगी कि इस मुल्क की आत्मा को कहीं कुछ चोट लगे, कहीं कुछ जगे और इस दुनिया की दौड़ में पिछड़ न जाय। हम बहुत पिछड़ गये हैं।

●●

पत्र प्रेरणा

(ला० सुन्दरलाल जी, बंगलो रोड–जवाहर नगर दिल्ली–७ को आचार्य रजनीश जी द्वारा लिखे गये कुछ पत्र)

प्रिय आत्मन्

आपका पत्र मिल गया था। कुछ लिखने के लिए आपका कितना प्रेमपूर्ण आग्रह है। और मैं हूं कि अतल मौन में डूब गया हूं। बोलता हूं : काम करता हूं; पर भीतर है कि सतत् एक शून्य घिरा हुआ है। वहां तो कोई गति भी नहीं है। इस भाँति एक ही साथ दो जीवन जीता हुआ मालूम होता है। कैसा अभिनय है ?

पर शायद पूरा जीवन ही अभिनय है। और यह बोध एक अद्भुत मुक्ति का द्वार खोल रहा है। वह जो क्रिया के बीच अक्रिया है—गति के बीच गति शून्य है—परिवर्तन के बीच नित्य है—वही है सत्य; वही है सत्ता। वास्तविक जीवन इस नित्य में ही है। उसके बाहर केवल स्वप्नों का प्रवाह है।

सच ही, बाहर केवल स्वप्न हैं। उन्हें छोड़ने, न छोड़ने का प्रश्न नहीं—केवल उसके प्रति जागना ही पर्याप्त है। और जागते ही सब परिवर्तित हो जाता है। वह दीखता है जो देख रहा है। और केन्द्र बदल जाता है। प्रकृति से पुरुष पर पहुंचना हो जाता है। यह पहुंच क्या दे जाती है ? कहा नहीं जा सकता है। कभी कहा नहीं गया है। कभी कहा भी नहीं जायेगा। स्वयं जाने बिना जानने का और कोई मार्ग नहीं है। स्वयं मर कर मृत्यु जानी जाती है। स्वयं डूब कर सत्य जाना जाता है। प्रभु सत्य में डुबाये यही कामना है।

१३ अगस्त–१९६२ प्रभात।

प्रिय आत्मन्

प्रणाम आपका पत्र पढ़ कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। मैं अभी तो कुछ भी नहीं लिखा हूं। एक ध्यान केन्द्र जरूर यहां बनाया है, जिसमें कुछ साथी प्रयोग कर रहे हैं। इन प्रयोगों से उपलब्ध नतीजों से परिपूर्ण रूप से सुनिश्चित हो जाने पर अवश्य ही कुछ लिखने की संभावना है। मैं अपने स्वयं के प्रयोगों पर निश्चित निष्कर्षों पर पहुंचा हूं। पर उनकी अन्यों के लिए उपयोगिता को भी परख लेना चाहता हूं। मैं शास्त्रीय ढंग से कुछ भी लिखना नहीं चाहता –मेरी दृष्टि वैज्ञानिक है। मनो–वैज्ञानिक और पार–मनोवैज्ञानिक प्रयोगों के आधार पर योग के विषय में कुछ कहने का विचार है। इस संबंध में बहुत सी भ्रांत धारणायें प्रचलित हैं—उनका खंडन भी आवश्यक है—इसलिए उन पर भी प्रयोग करके देख रहा हूं। इस कार्य में मेरी दृष्टि में कोई संप्रदाय या पक्ष का अनुमोदन भी नहीं है। इस और कभी आवें तो बहुत सी चर्चा हो सकती है।

१ अक्टूबर–१९६२।

प्रिय आत्मन्।

प्रणाम। मैं अभी अभी राज नगर (राजस्थान) से लौटा हूं। वहाँ आचार्य श्री तुलसी के मर्यादा महोत्सव में आमंत्रित था। कोई ४०० साधु– साध्वियों को ध्यान योग के सामूहिक प्रयोग से परिचित कराया है। अद्‌भुत परिणाम हुए हैं। मेरा देखना है कि ध्यान समग्र धर्म साधना का केन्द्रीय तत्व है और शेष, अहिंसा, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य आदि उसके परिणाम हैं। ध्यान की पूर्णता– समाधि–उपलब्ध होने से वे अपने आप चले आते हैं। उन का विकास सहज ही हो जाता है। इस मूल साधना को भूल जाने से हमारा सब प्रयास बाह्य और सतही हो कर रह जाता है। धर्म साधना कोरी नैतिक साधना नहीं है; वह मूलतः योग साधना है। केवल नीति नकारात्मक है और नकार पर कोई स्थायी भित्ति खड़ी नहीं है। योग विधायक है और इसलिये वह आधार है। मैं इस विधायक आधार को सब तक पहुंचा देना चाहता हूं।

१२ फरवरी १९६३ रात्रि।

●●

प्रिय आत्मन्।

प्रणाम। पूरी मई बाहर रहने से स्वास्थ्य पर कुछ बुरा असर हुआ। इसलिये जून में आयोजित बम्बई, कलकत्ता और जयपुर के सारे कार्यक्रम स्थगित कर दिये हैं।

समाधि योग पर आप प्रयोग कर रहे हैं यह जान कर प्रसन्नता हुई। परिणाम की नहीं, प्रयोग की ही चिन्ता करें; परिणाम तो एक दिन आ ही जाता है, वह अनुक्रम से नहीं, अनायास से आता है, ज्ञात भी नहीं पड़ता है और उसका आगमन हो जाता है और एक क्षण में जीवन कुछ से कुछ हो जाता है।

भगवान महावीर पर अभी नहीं लिख रहा हूं। लिखने के प्रति मुझमें कोई प्रेरणा ही नहीं है। आपकी जबरदस्ती से कुछ हो सके तो बात दूसरी है। शेष शुभ।

३ जून १९६३

●●

चिदात्मन्।

आपके पत्र मिले। मैं बाहर था। अतः शीघ्र प्रत्युत्तर संभव नहीं हो सका। अभी अभी लौटा हूं, राणकपुर में शिविर लिया था, वह शिविर केवल राजस्थान के मित्रों के लिये था। इस लिए आपको सूचित नहीं किया था, पाँच दिन का शिविर था, और कोई ६० शिविरार्थी थे—शिविर अभूत पूर्व रूप से सफल रहा है और महत् परिणाम दिखाई पड़े हैं। उन परिणामों से संयोजक मित्रों का साहस बढ़ा है, और वे जल्दी ही अखिल भारतीय स्तर पर एक शिविर आयोजित करने का विचार कर रहे हैं। उसमें आपको आना ही है।

यह जानकर अति आनंदित हूं कि ध्यान पर आपका कार्य चल रहा है, केवल मौन होना है। बस मौन हो जाना ही सब कुछ है। मौन का अर्थ वाणी के अभाव से ही नहीं – मौन का अर्थ है, विचार का अभाव। चित्त जब निस्तरंग होता है, तो अनंत से संबंधित हो जाता है। शान्त बैठ कर विचार प्रवाह को देखते रहें – कुछ करें नहीं; केवल देखें, वह केवल देखना ही विचारों को विसर्जित कर देता है। दर्शन का जागरण विचार विकार से मुक्ति है। और जब विचार नहीं होते हैं तो चैतन्य का आविर्भाव होता है। यही समाधि है। सभी मित्रों को मेरा प्रेम कहें। १७ जून १९६४

सत्य और अन्तरानुभूति

संकलन : आलोक कुमार पांडे

आगे एक प्रश्न पूछा हैं कि पुनर्जन्म होता है कि नहीं।

जो जीवनको जानलेता है उसके लिए मृत्यु विलीन हो जाती है। मृत्यु हो ही नहीं सकती। लेकिन हम जीवन को जानते नहीं है। क्या आप सारे लोग, हम लोग मृत्यु से घबराये हुए नहीं हैं ? अगर हम जीवन को जानते होते तो मृत्यु से कैसे घबराते। जीवन की क्या कोई मृत्यु हो सकती है ? और जिसकी मृत्यु हो जाए उसे क्या हम जीवन कहेंगे ? जो जीवन है उसकी कोई मृत्यु नहीं है, जो जीवन है उसका कोई अन्त नहीं है। लेकिन हम जीवन से परिचित भी नहीं हैं। हम जीवन से परिचित क्यों नहीं हैं ? हम जीवन से इसलिए परिचित नहीं हैं कि जीवन हमेशा वर्तमान में होता है। और हम ! हम या तो अतीत में होते हैं या भविष्य में होते हैं। जीवन हमेशा वर्तमान में है। समय के ये तीन खण्ड हैं—अतीत है जो बीत गया, भविष्य है जो अभी नहीं आया और वर्तमान का छोटा सा क्षण है जो मौजूद है।

वह जो लिविंग प्रजेन्ट है, वह जो जीवित वर्तमान का क्षण है उसमें हम कभी नहीं होते। वह बहुत छोटा सा क्षण है। इसके पहले कि हम होश में आयें, वह अतीत हो जायगा। लेकिन हमारा चित्त या तो अतीत में होता है, हम पीछे की बातें सोचते रहते हैं या हम आगे की बातें सोचते हैं इसलिए उससे वंचित हो जाते हैं जो हैं, जो इसी क्षण है।

मैं अपने एक मित्र को लेकर एक नाव में उन्हें बिठाकर पहाड़ों को दिखाने और नदी की यात्रा को ले गया। वे दूर से बाहर के मुल्कों से घूम कर लौटे थे। उन्होंने बहुत यात्राएं की हैं और अनेकानेक नदियाँ और पहाड़ देखे हैं। मैं उन्हें घुमाने ले गया। वे मुझसे बोले, वहाँ क्या होगा ? मैंने तो बहुत झीलें, बहुत सुन्दर पहाड़, बहुत प्रपात देखे हैं। मैंने कहा—फिर भी चलें। क्योंकि मेरी मान्यता है कि हर चीज का अपना सौन्दर्य है। किसी सौन्दर्य की किसी दूसरे सौन्दर्य से कोई तुलना नहीं हो सकती। क्योंकि इस जगत में हर चीज अनूठी है और कोई चीज दूसरी जैसी नहीं है। एक छोटा सा कंकड भी अपने में यूनिक है,बेजोड़ है। आप सारी जमीन खोज लेंतो उस जैसा दूसराटुकड़ा नहीं मिलेगा। एक छोटा सा फूल भी अपने में बेजोड़ है। वैसा दूसरा फूल पूरी जमीन पर खोजने से नहीं मिलेगा। लेकिन उनसे मैंने कहा, चलें। जो छोटी सी पहाड़िया हैं और छोटी सी नदी है, उसको ही देख लें। मैं उनको लेकर गया। दो घण्टे उन पहाड़ों में, नदी में नाव पर सब तरह से घूमा। वे स्विटजरलैंड की झीलों की बात करते रहे। काश्मीर की झीलों की बातें करते रहे। मैं सुनता रहा। फिर जब हम लौटे दो घंटे बाद, तो उन्होंने कहा, बड़ी सुन्दर जगह थी। मैंने उनके मुँह पर हाथ रख दिया और कहा, मत कहें। क्योंकि वहाँ मैं अकेला ही गया, आप वहाँ नहीं गये। आप वहाँ नहीं थे, मैं ही वहाँ था। बोले, यह आप क्या बात कर रहे हैं, मैं आपके साथ था। दो घण्टे वहाँ घूमा। मैंने कहा, आप मेरे साथ दिखायी पड़ते थे, आप मेरे साथ थे नहीं। आपका चित्त स्विटजरलैंड में रहा होगा। काश्मीर में रहा होगा। लेकिन वह जो छोटी सी

पहाड़ियां थीं, छोटी सी नदी थी उसमें नहीं था। आप मौजूद नहीं थे। जो आपके सामने था वह दिखाई नहीं पड़ रहा था। स्मृति पीछे चल रही थी और स्मृति के फिल्म के कारण जो मौजूद था वह छिप गया। फिर मैंने उनसे कहा और अब मैं यह भी समझ गया कि स्विटजरलैंड की झीलों के बारे में जो आप कहते हैं वह भी झूठ होगा। क्योंकि जब आप उन झीलों पर रहे होंगे तो मन कहीं और रहा होगा, क्योंकि मैं आपके मन की आदत को समझ गया।

यह हमारे सबके मन की आदत है। हम जहाँ हैं मन वहाँ नहीं है, जहाँ हम नहीं हैं वहाँ मन है। इस भाँति हम जीवन से वंचित रह जाते हैं। हम या तो अतीत के सम्बन्ध में सोचते रहते हैं। दोनों ही स्थितियों में जो मौजूद है वह हमसे चूक जाता है। वह हमसे वंचित हो जाता है और मैंने कहा, जीवन सदा वर्तमान में है। न तो अतीत में कोई जीवन है और न भविष्य में कोई जीवन है। यह जो हमारा चित्त है, यह जो हमारा मन है, यह जो निरन्तर अतीत में और भविष्य में घूमता है। इसके कारण हम जीवन की जो निरन्तर धारा है उससे अपरिचित रह जाते हैं।

जीवन का अध्ययन करिये, मन को अतीत में मत जाने दीजिये। मन को व्यर्थ भविष्य में मत भटकने दीजिए। उसे लाइये, जो मौजूद है,वहाँ मौजूद करिये। अगर चाँद के पासबैठे हैं थोड़ी देर, तो थोड़ी देर तो चाँद के पास ही रह जाइये और मन के सारे अतीत और भविष्य के चिन्तन को छोड़ दीजिये। अगर फूल के पास बैठे हैं तो थोड़ी देर फूल के पास ही रह जाइये और मन के सारे चिन्तन को छोड़ दीजिये। और आप हैरान हो जायेंगे। जिसे शास्त्रों में देखा जाता है वह निरन्तर आपके पास मौजूद है। जिसे शास्त्रों में नहीं पा सकेंगे वह निरन्तर निकट है, लेकिन हम अनुपस्थित हैं। स्मरण रखें, सत्य सदा उपस्थित है, हम ही अनुपस्थित हैं। परमात्मा हमेशा उपस्थित है लेकिन हम उसके प्रति उन्मुख नहीं हैं। हमारी आखें बन्द हैं या कहीं और भटकी हुई हैं। मैं कहूंगा, अध्ययन जरूर करिये, लेकिन जीवन का। जीवन के अध्ययन की शर्त है कि विचार को छोड़कर जीवन को देखिये। कभी आपने किसी चेहरे को देखा है बिना विचार के ? कभी आपने कोई आखें देखी हैं बिना विचार के ? कभी आपने आँखें उठाकर सूरज को देखा है बिना विचार के ? कभी आपने सागर को देखा है बिना विचार के ? कोई चेहरा, कोई पर्वत, कोई फूल, कोई दरख्त, कोई सड़क, राह पर चलते हुए लोग, कोई कभी देखे होंगे बिना विचार के ? अगर नहीं देखे, तो जीवन से कैसे परिचित होगे ?

आप अपने विचार से घिरे होते हैं और जीवन खराब जाता है। विचार को छोड़ दें और देखें, विचार को तोड़ दें और देखें, विचार को रुक जाने दें और देखें। तब तो आपको दिखाई पड़ेगा वह जीवन है। और वह जीवन ! उससे बड़ा कोई अध्ययन नहीं, उससे बड़ा कोई शास्त्र नहीं। सब शास्त्र मिट जायें, तो भी सत्य नष्ट नहीं होगा। वह तो निरन्तर मौजूद है और शास्त्र ही शास्त्र बढ़ जायें, बहुत बढ़ रहे हैं और मैं सुनता हूं कि सारी दुनियाँ में कोई पाँच हजार ग्रंथ हर साल छप जाते हैं और हर साल पाँच हजार ग्रंथ ? थोड़े दिनों में क्या स्थिति होगी ? आदमी का रहना मुश्किल हो जायगा। इतनी किताबें हों, इन सारी किताबों के बावजूद क्या हो रहा है। आदमी कहाँ है ? आदमी रोज गिरता जा रहा है, किताबें बढ़ती जा रहीं हैं, आदमी सिकुड़ता जा रहा है, किताबें बढ़ती जायेंगी, आदमी छोटा होता जायगा। धीरे धीरे किताबों के पहाड़ हो जायेंगे और आदमी का ज्ञान! आदमी का ज्ञान शून्य होता जा रहा है। शास्त्र से नहीं, शब्द से नहीं, जीवन के प्रति सजग होने से, जाग्रत होने से जीवन मिलता है। मैं समझता हूं, मेरी बात समझ में आई होगी। अध्ययन ही करना है तो जीवन का करें। जीवन जो परमात्मा की खुली किताब है। लोग कहते हैं परमात्मा ने वेद लिखे, लोग कहते हैं परमात्मा के कुरान भेजी, लोग कहते हैं परमात्मा ने अपना पुत्र भेजा और क्राइस्ट से बाइबिल लिखवायी। ये सब पागलपन की बातें है। परमात्मा ने तो एक ही किताब

लिखी है। वह जिन्दगी की किताब है और तो किताब परमात्मा की लिखी हुई नहीं हैं, और सब किताबें तो आदमी के हस्ताक्षर हैं। सब किताबें आदमी के हाथ की हैं। एक ही किताब है जीवन की जो परमात्मा की है। अगर वेद ही कहना है तो उसे कहें, अगर कुरान ही कहना है तो उसे कहें, अगर बाइबिल ही कहना है तो उसे कहें। वह जो जीवन, परमात्मा की किताब है, उसे अध्ययन करें। उसे जाने, उसे पहचानें और बीच में किताबों को न आने दें। बीच में किताबें आ जायेंगी तो जीवन का अध्ययन करने से आप वंचित हो जायेंगे। बीच में कोई किताब न आने दें और सीधे जीवन को देखें। परमात्मा के पास जाना है तो किताबें लेकर जाने की कौन सी जरूरत है। वह कोई स्कूल थोड़े ही है। वहाँ किताबों का भार ले लाने कीं क्या जरूरत है ?

एक छोटी सी कहानी मुझे स्मरण आती है। एक सूफी फकीर हुआ। उसने एक रात स्वप्न देखा कि वह अचानक स्वर्ग पहुंच गया है। परमात्मा की बस्ती में पहुंच गया है। वहाँ बड़े जोर से उत्सव मनाया जा रहा है रात को। बहुत भीड़ है, बड़ा प्रकाश है, बहुत झंडियाँ हैं, बड़ा आलोक है, रास्ते बहुत सजाये गये हैं। खुश हो गया कि बड़ा उत्सव है। वह राह के किनारे खड़ा हो गया और जो भीड़ वहां करोड़ों की संख्या में एकत्रित थी, उस भीड़ में से उसने किसी से पूछा—यह क्या हो रहा है ?

उसने कहा—परमात्मा की सवारी निकल रही है। आज उनका जन्म दिन है। उसने कहा, बड़े भाग्य से मैं यहाँ आ गया और आज मुझे यह अवसर मिल गया कि मैं इसे देख लूं। फिर एक बहुत बड़ी भीड़ और एक बहुत बड़ा जुलूस निकला जिसमें एक घोड़े पर भगवान बुद्ध बैठे थे। करोड़-करोड़ लोग उनके पीछे थे। उसने पूछा, क्या भगवान की सवारी आ गयी ? उन्होंने कहा—नहीं, यह तो बुद्ध की सवारी है और उनके पीछे अनुयायीं हैं। फिर राम की सवारी थी, फिर महावीर की थी, फिर क्राइस्ट की, फिर कृष्ण की थी और मुहम्मद की थी। वह आदमी बोला भगवान की सवारी कहाँ। लोगों ने कहा, उनके अवतारों की सवारियां निकल रही हैं, उनके प्रेमी जा रहे हैं। उसने सोचा, जब इनकी सवारियों में करोड़ों-करोड़ों लोग हैं तो भगवान की सवारी में क्या नहीं होगा हाल। आखीर में जबकि सारा जलसा निकल गया और कोई नहीं दिखाई पड़ा, तो आखीर में एक मरे घोड़े पर एक बूढ़ा आदमी बैठा आ रहा था।

फकीर ने पूंछा—कि अभी तक भगवान की सवारी नहीं आयी ? लोगों ने कहा— यह जो आ रही है, यह भगवान की सवारी है, इनके साथ कोई भी नहीं। यह बिलकुल अकेले पड़ गये हैं। बाकी सारे लोग कोई राम के साथ हैं, कोई कृष्ण के साथ हैं, कोई महावीर के, कोई बुद्ध के, कोई क्राइस्ट के, कोई मुहम्मद के। इनके साथ कोई भी नहीं है, इनकी सवारी अकेले जा रही है। यह जन्म दिन उन्हीं का है उनकी सवारी बिल्कुल अकेली है। ऐसा ही हुआ है। किताबें, गुरू, अवतार और ईश्वर पुत्र बीच में आ गये। जबकि परमात्मा से कोई भी सम्पर्क अगर हो सकता है तो सीधा हो सकता है। बीच बीच में कोई आदमी नहीं हो सकता है प्रेम में। अब मैं किसी को प्रेम करूं, और एक आदमी बीच में हो, प्रेम कैसे होगा ? मैं प्रार्थना करूं और एक आदमी बीच में हो तो प्रार्थना कैसे होगी ? मैं किसी को प्रेम करूँ और बीच में कोई आदमी हो, एजेन्ट हो तो कैसे प्रेम होगा। प्रेम तो सीधा होगा, वहां बीच में कोई नहीं होगा। प्रार्थना भी प्रेम है, वह अपरिसीम प्रेम है, वह भी सीधी होगी, वहाँ भी कोई बीच में नहीं हो सकता। न कोई किताब, न कोई शब्द, न कोई गुरू। जो भी बीच में हो उसे हटा दें, कृपा करें उसे हटा दें। अगर परमात्मा तक या सत्य तक पहुंचना हो तो बीच से सबको हटा लें। आप काफी हैं, अकेले काफी हैं। जीवन का अध्ययन करें और जीवन को जानें। जीवन से जो मिलेगा वही सत्य है, जीवन से जो मिलेगा वही जीवन्त है और जीवन से जो मिलेगा वही मुक्त करता है।

●●●

आचार्य श्री रजनीश की अमृतवाणी की
त्रैमासिक पत्रिका

"ज्योति शिखा"

(मनुष्य के आध्यात्मिक पुनरुत्थान के लिऐ समर्पित)

सम्पादक : श्री महिपाल

वार्षिक शुल्क : ५ रु० — एक प्रति : १.२५ न.पै.

प्राप्ति स्थल—
जीवन जागृति केन्द्र, एम्पायर बिल्डिग, रूम नं० ५३,
दादाभाई नौरोजी रोड, बम्बई-१.
फोन : २६४५३०

आचार्य श्री रजनीशजी की सृजनात्मक जीवन दृष्टि का
पाक्षिक पत्र

युक्रांद

वार्षिक शुल्क—१२)

देश के कोने-कोने में
विक्रय एजेन्ट नियुक्त करना है

सम्पर्क करने तथा शुल्क भेजने का
पता
अरविंदकुमार, सदस्य, युक्रांद प्रकाशन समिति,
कमला नेहरू नगर, जबलपुर । फोन : २६५७.

FOR GOOD MUSIC TUNE IN

'SWAR SANGAM'

EVERY SUNDAY

from : 9-00 to 9-30 p. m.

Over Radio Ceylon

ON
25 AND 49 METER BANDS

ALSO
'SANGAM'

daily from 8-10 to 8-40 p.m.

ON 19 METER BAND

OVER

RADIO VOICE OF THE GOSPEL,
ADDIS ABABA ETHIOPIA

PRODUCED BY *CARAVS* 15, Nehru Marg, JABALPUR (M. P.)

तुलसी मानस प्रकाशन

गुप्ता मिल्स स्टेट, बम्बई--१०

श्री हरिकिशनदास अग्रवाल द्वारा लिखित :–

१. संसार का सार (मू. रु. ३) आधुनिक खेलों, वैज्ञानिक साधनों, जीव जन्तुओं, वनस्पतियों विभिन्न व्यवसायक व्यक्तियों तथा पदार्थों आदि के द्वारा अध्यात्म शिक्षा देने का यह प्रयत्न नवीन होते हुये अपने प्रस्तुतीकरण के ढंग और साथ ही विवेचन के संदर्भ में एक नवीनता को लिए हुये हैं। नवभारत टाइम्स बम्बई

ज्ञान साधना (मू. रु. २) लोनावाला शिविर में पधारे हुए महापुरुषों के ज्ञानसाधना के प्रति संकेत।

३. विज्ञान से ज्ञान (मू. रु. १) ऐक्सरे इत्यादि आधुनिक उदाहरणों को लेकर अध्यात्मविद्या नवयुवकों तक पहुंचाने का सफल प्रयास है।

४. वेदान्त नवनीत (मू. १.५० पैसे) सन् १९६४ के अमृतसर के वेदान्त सम्मेलन में पधारे महात्माओं प्रवचनों का सार है।

५. वेदान्त का सरल बोध (मू. रु. १) वेदान्त के क्लिष्ट ग्रन्थों के सिद्धान्त बड़े ही सरल उदाहरणों द्वारा समझाकर पाठकों के सामने रखे गये हैं।

६. आध्यात्मिक पिक्टोरियल [हिन्दी व अंग्रेजी] (मू. रु. ३) इस पुस्तक में ज्ञान की गम्भीर बातों को सूत्र रूप में बाँध कर उन्हें चित्र द्वारा प्रस्तुत किया गया है। वाक्य हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में हैं।

७. मुमुक्ष [आध्यात्मिक उपन्यास] (मू. रु. ३) आध्यात्मिक दृष्टि से पात्रों के जीवन किस प्रकार उपन्यास पाठकों के भौतिक दृष्टि को बदल सकते हैं, इस विषय में एक अत्यन्त ही नया प्रयोग है।

८. मन की शांति [पद्य] (मू. रु. ४ अंग्रेजी मूल रचना 'पीस आफ माइण्ड' का अनुवाद, जिसमें मन की शान्ति देने वाली गहन आध्यात्मविद्या को सरल भाषा में पद्यबद्ध किया गया है।

९. हमारी परम्परा (मू. रु. २) हमारी ऋषि परम्परा क्या है और उसे जीवन में किस प्रकार उतारा जाए—

और

अध्यात्मिक मासिक

म न न

जिसमें प्रति मास भारत के उच्चकोटि के विद्वानों के लेख एवं प्रख्यात संत-महात्माओं की अनुभव-पूर्ण वाणी को संकलित कर पाठकों तक पहुंचाया जाता है।

एक प्रति ४० पैसे

वार्षिक ४ रु० दो वार्षिक ७ रु० तीन वार्षिक १० रु०

चार वार्षिक १२ रु० और पांच वार्षिक १५ रु०

★ NICKEL SULPHATE
★ NICKEL CARBONATE
★ NICKEL FORMATE
★ SODIUM FORMATE
★ TRI CALCIUM PHOSPHATE B.P.C.
★ PHOSPHORIC ACID
Technical 85% Water White

Manufacturers:

ANANG CHEMICALS

FACTORY:– Kolbad Road
Panch Pakhadi
J. K. Gram
THANA
Maharashtra
Phone—591576

OFFICE:– 20,"L. K. Market"
Zaveri Bazar
Bombay-2 B. R.
Phone—29528

WHERE COURTESY IS YOUR HOST

Kwality Restaurant

SADAR JABALPUR

Sole Distributors

FOR

Kwality Ice Cream

उत्तम तम्बाकू और कुशल कारीगरां से बनी

शेर और पहलवान छाप बिड़ी

भारत में अग्रणी है

-०-

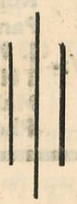

मोहनलाल हरगोविंददास

(जबलपुर म० प्र०)

When you wear

Sikova

EMBROIDERED FABRICS

the best compliments come to you!

Stronachs Z. 34

Kwality

ICE CREAM

90-A, Industrial Area, Ludhiana

●

ANNOUNCE THE APPOINTMENT OF THE FOLLOWING PARTIES
AS THEIR WHOLESALE AGENTS FOR ICE CREAM

1. M/s Kishore & Co., 4-A, Lawrence Road, Amritsar.
2. M/s Emkay Traders, Chandra Buildings, Jullundhur.
3. M/s Kwality Ice Cream Centre, Canal Road, Jammu.
4. M/s Upkar Agencies, Dharampura, Patiala.
5. M/s Subhash Coffee Bar, Moga
6. M/s Sood & Co., Sadar Bazar, Ambala.

●

THE PARTIES INTERESTED FOR SUB-AGENCIES
IN THE ABOVE NOTED STATIONS MAY CONTACT THESE FIRMS

मानसेवी सम्पादक अजितकुमार, एम. काम., एल एल. बी., स्वत्वाधिकारी प्रकाशक एवं मुद्रक : युक्रांद प्रकाशन समिति, कमला नेहरू नगर, जबलपुर। मुद्रण स्थल : जबलपुर को-आप० प्रिंटिंग प्रेस, गोलबाजार, जबलपुर।